

रांची (आजाद सिपाही)। जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा केंद्र में मंगलवार को शुरू हुई स्वातंत्र्य संग्राम मीस सेम थी की परीक्षा बुधवार को संपन्न हुई। नागपुरी भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ उमेश नंद तिवारी, डॉ सविता केसरी, डॉ बीरेन्द्र कुमार महतो और डॉ रीझू नायक ने बताया कि विभाग द्वारा आयोजित इस परीक्षा में 58 परीक्षार्थी उपस्थित रहे। सभी छात्रों ने शांतिपूर्ण परीक्षा संपन्न करने में अपनी महती भूमिका निभाई। डॉ तिवारी ने बताया कि परीक्षा के दौरान कोविड के खतरों को देखते हुए एहतियात के तौर पर सोशल डिस्टेंस को पूरा ख्याल रखा गया। परीक्षार्थियों ने परीक्षा के बाद अपनी खुशी जाहिर करते हुए बताया कि प्रश्न काफी आसन थे, जो भी पढ़ाई हुई थी उनसे सें ही प्रश्न पूछे गये थे। परीक्षा के सफल संचालन में नागपुरी विभाग के शोध छात्र नैह कुमारी, रवि कुमार, प्रवीण कुमार सिंह, विक्की मिंज और आलोक कुमार मिश्रा का सहयोग रहा।



मासिक अपराध समीक्षा बैठक में गोलीबारी रही फोकस

अपराध पर विशेष फोकस, अपराधी बरखो नहीं जायेंगे : पियूष पांडेय

बीरू कुमार
रामगढ़ (आजाद सिपाही)। एसपी पियूष पांडेय ने बुधवार को छतरमांडू स्थित पुलिस अधीक्षक कार्यालय में पुलिस पदाधिकारियों के साथ मासिक अपराध समीक्षा बैठक की। बैठक में हाल में ही हुए गोलीबारी की घटनाओं पर विशेष रूप से चर्चा किया। साथ ही अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिया।

अधिकारी रहें सतर्क, अपराधियों पर करें कड़ी कार्रवाई

एसपी पियूष पांडेय ने बताया कि रजरप्पा और रामगढ़ में दो बड़ी घटनाएं घटी है। जिस पर मैं खुद नजर रख रहा हूं। एसआईटी की टीम जांच कर रही है। अपराधी जल्द पुलिस के गिरफ्त में होंगे। किसी भी कीमत पर जिले में शांति



रामगढ़ उपचुनाव को लेकर अधिकारियों को विशेष दिशा निर्देश
एसपी पियूष पांडे ने बताया कि आगामी रामगढ़ विधानसभा उपचुनाव को लेकर अधिकारियों को विशेष रूप से निर्देशित किया गया है। उन्होंने कहा कि अधिकारियों को आदेश दिया गया है कि बूथ वाइज निरीक्षण कर पूरी व्यवस्था को समझें। संवेदनशील एवं अतिसंवेदनशील बूथों को चिन्हित कर करवाई करें। उपचुनाव को शांतिपूर्ण संपन्न कराने को लेकर तैयारी में जुट जाएं। इसके अलावा सड़क सुरक्षा अभियान को भी सफल बनाने का निर्देश दिया है।

व्यवस्था भंग होने नहीं दिया जाएगा। टीम में शामिल अधिकारियों को विशेष रूप से निर्देशित किया गया है। बहुत जल्द ही रजरप्पा और रामगढ़ गोलीकांड में शामिल अपराधी गिरफ्त में होंगे।

सरला बिरला विवि में समीक्षा बैठक आयोजित

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। बुधवार को कुलपति प्रोफेसर गोपाल पाठक की अध्यक्षता में विद्या भारती उच्च शिक्षा संस्थान द्वारा आगामी 16- 17 जनवरी, 2023 को देवी अहिंत्वा विश्वविद्यालय इंदौर भोपाल मध्य प्रदेश में अखिल भारतीय संस्थागत नेतृत्व समागम की तैयारी के लिए समीक्षा बैठक आहूत की गयी। जिसमें झारखंड केन्द्रीय विश्वविद्यालय सहित राज्य के सभी सरकारी एवं निजी विश्वविद्यालयों के कुलपति, कुलसचिव, चेयरमैन, निदेशक, प्राचार्य तथा प्राध्यापक उपस्थित थे। बैठक में संस्थाओं की आपसी संबद्धता को बढ़ावा और पोषण, सतत विकास व मूल दक्षतायें, शोध और नवाचार, भारतीय ज्ञान परंपरा, सामाजिक विकास, पर्यावरण, नेतृत्व और प्रशासन तथा उच्च शिक्षा और राष्ट्रीय विकास के अंतर्गत वहनीय और सुलभ गुणात्मक शिक्षा तथा शिक्षा में लोकोपकार एवं सामाजिक जुड़ाव तथा उत्तरदायित्व जैसे विषयों पर गहन विचार विमर्श किया गया। बैठक में अपने विचार



रखते हुए रांची विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर अजीत कुमार सिन्हा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के सफल क्रियान्वयन के लिए सभी विश्वविद्यालयों को एक साथ मिलकर छात्रों के बेहतर भविष्य निर्माण के लिए आपसी समन्वय एवं अकादमिक सहयोग तथा संस्थागत तालमेल बनाए जाने की बात कही। उन्होंने कहा कि चाहे सरकारी विश्वविद्यालय हो या निजी विश्वविद्यालय सभी का उद्देश्य एक ही होना चाहिए - अपने छात्रों को बेहतर शिक्षा प्रदान कर योग्य नागरिक बनाना। वहीं रांची विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ राजकुमार शर्मा ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति में वर्णित भारतीय ज्ञान परंपरा के अवधारणाओं की चर्चा करते हुए पाणिनी के सूत्रों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान

परंपरा के बदीलत ही भारत ज्ञान के क्षेत्र में विश्व का सिरमौर था। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सफल क्रियान्वयन के परिणाम स्वरूप अवश्य ही भारत पुनः ज्ञान के क्षेत्र में सिरमौर बनेगा और विश्व का मार्गदर्शन करेगा। बैठक में सभी विश्वविद्यालय के प्रतिनिधियों ने सभी विश्वविद्यालयों की पाठ्यक्रम में एकरूपता पर जोर दिया। बैठक की अध्यक्षता कर रहे हैं कुलपति प्रोफेसर गोपाल पाठक ने सभी विश्वविद्यालय प्रतिनिधियों को शत प्रतिशत कक्षाएं संचालित कराने एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की अपील की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालयों को बेहतर एवं गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान करना होगा ताकि समाज को नई दिशा मिल सके। बैठक का संचालन कुलसचिव प्रोफेसर विजय

कुमार सिंह ने की तथा अंत में धन्यवाद जापन की औपचारिकता भी उन्होंने ही पूरी की।

बैठक में ये रहे उपस्थित

बैठक में रांची विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर अजीत कुमार सिन्हा, वाइबीएन विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ एस पी यादव, उषा मार्टिन विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ एके मिश्रा, आदित्य प्रकाश जलन टीचर्स ट्रेनिंग कॉलेज के प्राचार्य डॉ रामकेश पांडेय, सेंट्रल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर डॉ रामकिशोर सिंह, वाईबीएन विश्वविद्यालय के डिप्टी रजिस्ट्रार डॉ एस तिवारी, रांची विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ राजकुमार शर्मा, साई नाथ यूनिवर्सिटी के ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट के डायरेक्टर डॉ वीरेंद्र गोस्वामी, झारखंड टीचर ट्रेनिंग कॉलेज के प्रो रामजी यादव, प्रवीण कुमार, डॉ सन्दीप कुमार, डॉ राधा माधव झा, डॉ रिया मुखर्जी, प्रो अमित गुप्ता, डॉ भारद्वाज शुक्ल, ओएसडी अनुभव अंकित, धर्मंद कुमार ठाकुर आदि उपस्थित थे।

विवेकानंद महोत्सव, आज दूसरे दिन भी प्रभात फेरी निकाली

रांची (आजाद सिपाही)। 10 जनवरी से 12 जनवरी तक चलने वाला विवेकानंद महोत्सव, डोरंडा स्थित विवेकानंद चौक आज दूसरे दिन प्रभात फेरी निकाली गई। जिसमें 250 से अधिक छात्र-छात्राओं ने हिस्सा लिया। इस प्रभात फेरी में रांची को साफ और सुंदर रखने की अपील की गई साथ ही इस मौके पर पेड़ लगाने और जल



बचाने की भी अपील की गई। कार्यक्रम

में दिव्यम फाउंडेशन और युवा सोच, रांची की संयुक्त भागीदारी रही। कार्यक्रम के प्रारंभ में स्वामी विवेकानंद जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर और दीप जलाकर करते हुए किया गया। प्रभात फेरी को अतिथियों द्वारा हरी झंडी दिखाकर रवाना किया गया। ओ विवेकानंद चौक से हिन्नु चौक तक चली मौके पर अतिथि के रूप में प्रिंस

आजमानी, आशुतोष सिंह, सुमित कुमार, अमित गुप्ता शामिल हुए। कार्यक्रम के सफल संचालन समिति के अध्यक्ष कृष्णा मिश्रा, सचिव सुमित कुमार, गृह्य सिंह, नितेश सिंह, राहुल मिश्रा, आकाश सोनी, सलोनी श्रीवास्तव, वाणी कुमारी, सूरज मिरी, अनिकेत सोनी आदि लोग सम्मिलित रहे।

डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय में विजयी प्रतिभागियों का सम्मान समारोह

यह श्रेष्ठ प्रदर्शन प्रतिभागियों के उत्साह का परिणाम : तपन कुमार शांडिल्य

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। किट्स, भुवनेश्वर में संपन्न 36वें इंटर यूनिवर्सिटी ईस्ट ज़ोन यूथ फेस्टिवल में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची के 49 सदस्यीय टीम ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया और कई ओवरऑल और व्यक्तिगत पुरस्कार अर्जित किए। संगीत की प्रतियोगिता में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची की टीम को पूरी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ इस विधा में युवराज मिश्रा को लाइट वोकल सोलो प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। इसी प्रकार इंस्टालेशन, ट्राइबल ऑर्किस्ट्रा और ऑन स्पोर्ट पेंटिंग प्रतियोगिता में डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय को पूरी प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। प्रोत्साज प्रतियोगिता में यहां के प्रतिभागियों ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। इसके अलावा कई



प्रतिभागियों ने एकल प्रदर्शन में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इन उत्कृष्ट प्रदर्शन और उपलब्धियों के लिए पूरे 49 सदस्यीय दल को आज विश्वविद्यालय में विशेष तौर पर सम्मानित किया गया। मौके पर कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य और कुलसचिव डॉ नमिता सिंह ने इस दल के नेतृत्वकर्ता डॉ गीतांजलि सिंह और डॉ राहुल देव साव सहित सभी प्रतिभागियों से इस पूरी प्रतियोगिता के अनुभवों की जानकारी प्राप्त की। प्रतिभागियों ने अपने अनुभवों को साझा किया। प्रतिभागियों ने अपने

मेडल और सर्टिफिकेट को इस अवसर पर काफ़ी उत्साह से दिखाया। इस विशिष्ट अवसर पर कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य ने कहा कि यह इन प्रतिभागियों के साथ समूचे विश्वविद्यालय के लिए गौरवाचिंत करने वाला पल है और आने वाले समय के लिए यह संकेत कि डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, रांची न सिर्फ अकादमिक दिशा में बल्कि अन्य सांस्कृतिक और खेल गतिविधियों में नित नई ऊंचाइयों की प्राप्ति की ओर अग्रसर है। उन्होंने कहा कि नए वर्ष में

विश्वविद्यालय में कई सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया जाना है जहां इन्हें पुनः अपनी विधा प्रदर्शित करने का अवसर प्राप्त होगा। मौके पर कुलसचिव डॉ नमिता सिंह ने कहा कि अगर पूर्व के प्रदर्शनों पर दृष्टि डाली जाए तो यह स्पष्ट है कि विश्वविद्यालय निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर है और यह एक अति शुभ संकेत प्रदान करता है। इसके उपरांत कुलपति डॉ तपन कुमार शांडिल्य और कुलसचिव रि नमिता सिंह ने प्रतिभागियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उनके सकारात्मक प्रयास और मनोयोग के फलस्वरूप समूचा विश्वविद्यालय परिवार गौरवाचिंत महसूस कर रहा है। गौरतलब है कि 49 सदस्यों सहित इस दल का नेतृत्व डॉ गीतांजलि सिंह और डॉ राहुल देव साव ने किया था। यह जानकारी पीआरओ प्रो राजेश कुमार सिंह ने दी।

ट्रिपल टेस्ट के लिए सरकार एक कदम भी नहीं चली: राजेश गुप्ता



रांची (आजाद सिपाही)। राज्य की गठबंधन की सरकार ओबीसी के हितों के प्रति असंवेदनशील है एक ओर जहां मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, बिहार सरकार ओबीसी का आरक्षण सुनिश्चित कर पंचायत और नगर निगम चुनवा कर लाी तो दूसरी तरफ उत्तर प्रदेश की सरकार ने ट्रिपल टेस्ट के तहत आयोग का गठन पदाधिकारियों का चयन भी कर लिया है। लेकिन झारखंड सरकार उस दिशा में विफल है। उक्त बातें राष्ट्रीय ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष राजेश कुमार गुप्ता ने आज प्रदेश कार्यालय में प्रेस वार्ता में कही श्री गुप्ता ने कहा कि राष्ट्रीय ओबीसी मोर्चा विगत मार्च से अब तक ट्रिपल टेस्ट करने की मांग को लेकर कई आंदोलन की है बावजूद सरकार उस दिशा में टस से मस नहीं हो रही है। अर्थात आयोग का भी गठन सरकार ने नहीं की है जबकि इसके लिए सुप्रीम कोर्ट में भी मामले चल रहे हैं सरकार न्यायालय की भी नहीं सुन रही है। प्रेस वार्ता के माध्यम से राष्ट्रीय ओबीसी मोर्चा अन्य मांगों में जातीय जनगणना कराने, स्वतंत्र ओबीसी मंत्रालय गठन करने और राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष व अन्य सदस्य के रिक्त पदों को भरने की मांग की है। प्रदेश उपाध्यक्ष सुबेदार एसएन सिंह कुशवाहा ने कहा की आगामी बजट में ओबीसी का भी बजट संख्या का अनुपात में वार्षिक बजट बननी चाहिए, जैसे अनुसूचित जाति जनजाति के लिए जनसंख्या अनुपात में बजट का प्रावधान किया जाता है. तथा 27 परसेंट आरक्षण लागू कर ही सरकारी नौकरियों में नियुक्ति निकाली जाए व राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग की अनुशंसा 50% आरक्षण को लागू किया जाए। प्रेस वार्ता में प्रदेश अध्यक्ष राजेश कुमार गुप्ता, प्रदेश उपाध्यक्ष उमेश जयसवाल, सुबेदार एसएन सिंह कुशवाहा, महासचिव श्याम सुंदर प्रसाद, शिवप्रसाद साहू, रामलखन साहू, संतोष शर्मा, अभय प्रसाद, रामचरण साहू उपस्थित थे।

सचिव ने एमआइएस और इ-वाहन का उद्घाटन किया

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। मंगलवार को सचिव (कोयला), कोयला मंत्रालय, भारत सरकार,अमृत लाल मीना नेसेंट्रल कोलफील्ड्स लिमिटेड (सीसीएल)के स्वाइस्व्यल संबंधी हॉस्पिटल मैनेजमेंट सिस्टलम (एमआइएस) एवं इ- वाहन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर अध्यक्ष, कोल इंडिया, प्रमोद अग्रवाल, अपर सचिव, कोयला मंत्रालय, भारत सरकार, एम. नागराजू, सीएमडी, सीसीएल पीएम. प्रसाद, निदेशक तकनीकी (संचालन) राम बाबू प्रसाद, निदेशक तकनीकी (योजना/परियोजना), बी. साइराम, निदेशक (वित्तब), पवन कुमार मिश्रा, निदेशक (कार्मिक), सीसीएल, हर्ष नाथ मिश्र, सीवीओ, पंकज कुमार, सीएमएस, सीसीएल डॉ. नीता पॉल सहितसीसीएल मुख्यालय के विभिन्न विभागों के



महाप्रबंधक/ विभागाध्यक्ष एवं चिकित्सकदकरण उपस्थित थे। सचिव (कोयला), अमृत लाल मीना ने अपने संबोधन में कहा कि इस एमआईएस प्रणाली से सीसीएल के सभी कर्मियों को विशेष लाभ मिलेगा एवं उनका रिकार्ड डिजिटल रूप से व्य वस्थित रहेगा। उन्होंने ने कहा कि सीसीएल के गांधीनगर अस्पताल सहित सीसीएल के क्षेत्रीय अस्पतालों में ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए कि सीसीएल कर्मी सहित स्टेसकहोल्डकर्स अपनी सुविधानुसार लाभोचित हो सके। अध्यक्ष प्रमोद अग्रवाल ने कहा कि मुझे गर्व है कि कारोना समय में भी

सीसीएल सहित कोल इंडिया के अन्य, अस्पतालों ने अपना उत्कृष्ट योगदान दिया और मुझे विश्वास है कि आगे भी इसी तरह सराहनीय कार्य हमारे चिकित्सक एवं पारा मेडिकल स्टीफ करते रहेंगे। सीसीएल के चिकित्सक डॉ शिल्पी ने पीपीटी के माध्यम से उपस्थित अतिथियों को एमआइएस के बारे में विस्तार से जानकारी दी। ज्ञातव्य हो किसीसीएल के सीएमडी, पीएम. प्रसाद के मार्गदर्शन में सीसीएल में 16 ई-वाहन को किराया पर लिया गया है और सीसीएल में पहली बार ई वाहन का उपयोग किया जायेगा। इसका उद्देश्य इको फ्रेंडली को

वह दस महत्वपूर्ण बातें जो छात्रों को अच्छे अंक लाने में मदद करेगी

हर स्टूडेंट को आज सफलता हासिल करने के लिए काफी मेहनत करना है क्योंकि आज शिक्षा के क्षेत्र में कंपटीशन बढ़ गया है, हर अभिभावक की इच्छा होती है कि उनका बच्चा अच्छे अंको से परीक्षा में पास करें। अगर बच्चों से जरा सी भी चूक होती है तो परीक्षा को पास करना आसान नहीं होता है इसलिए इस बढ़ते कंपटीशन के युग में किसी भी छात्र के लिए परीक्षा को पास करने में उसकी तैयारी पहले से करना जरूरी है।आज देखा जाता है कि बहुत से बच्चे को पढ़ने में मन नहीं लगता है और ये सोचते रहते हैं कि कल से पढ़ाई करेंगे तब तक परीक्षा करीब आ जाता है ऐसे में बहुत से बच्चों के पास तैयारी के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल पाता और फिर उनका परीक्षा अच्छ नहीं हो पाता है। आज हम बच्चों को इस तरह की कई परेशानियों से बचने के लिए कुछ महत्वपूर्ण बातों के साथ-साथ कम समय में अपने परीक्षा की तैयारी करने के लिए कुछ तरीके बताएंगे जिससे समय रहते हुए मेहनत करके अपनी परीक्षा की तैयारी अच्छे से कर सकते हैं।



साफदर ईमाम
सहायक शिक्षक
विषय अंग्रेजी
राजकीय +2 उच्च विद्यालय
कांके रांची

1. **परीक्षा के सिलेबस की जानकारी रखें:** अगर कोई भी छात्र कम से कम समय में और मेहनत के साथ परीक्षा की तैयारी करना चाहता है तो सबसे पहले परीक्षा का सिलेबस जानना चाहिए ताकि सब तैयारी सिलेबस के अनुसार हो सके।
2. **पिछले वर्षों के प्रश्न पत्र देखें :** यह किसी भी तरह के परीक्षा की तैयारी का सबसे आसान तरीका है। किसी भी परीक्षा के पिछले साल का प्रश्न पत्र देखने से आप यह पता आसानी से लगा सकते हैं कि परीक्षा में प्रश्न पत्र किस तरह के आते हैं और किस चैप्टर से कम प्रश्न पूछे जाते हैं। आप अच्छी तैयारी करना चाहते हैं यह

होता है।
5. **परीक्षा के लिए नोट्स बनाएं :** परीक्षा के लिए सिलेबस के अनुसार आप अपना नोट्स तैयार करें स्वयं का नोट्स तैयार करने से आपको टॉपिक की सभी बातों की जानकारी अपने शब्दों में मिल जाती है और जिस से आप परीक्षा हॉल में आसानी से सभी प्रश्नों का उत्तर दे सकते हैं यह आपके द्वारा की बनाया गया नोट्स है, आपको परीक्षा के समय काफी हद तक मदद करेगा।

6. **पढ़ाई एकांत और शान्त वातावरण में करें :** पढ़ाई के लिए शांत वातावरण चुनें अगर आप शांत वातावरण में पढ़ते हैं तो आपको याद करने की प्रक्रिया तेज हो जाती है। एकांत में पढ़ने से आपमें पढ़ाई करने की एकाग्रता बढ़ती है। आपका पूरा फोकस पढ़ाई पर रहता है। इसलिए कोशिश करें कि वैसे जगह को चुने जहां पर आप को कोई भी परेशानी नहीं हो और आप एक अच्छे वातावरण में परीक्षा की तैयारी कर सके। कम समय में तैयारी के लिए एकांत और शान्त वातावरण का होना बहुत जरूरी है।

7. **पढ़ाई के बीच में छोटे छोटे ब्रेक ले कर पढ़ें :** पढ़ने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप पढ़ते समय छोटे-छोटे ब्रेक लेकर पढ़ें इससे आप का मन पढ़ाई में लगा रहेगा और पढ़ाई उबाऊ नहीं लगेगा। छोटे-छोटे ब्रेक में आप किनेट, बैडमिंटन, खेल सकते हैं। मोबाइल गेम में ध्यान केंद्रित नहीं करना है मोबाइल से आपको और आपके दिमाग को थकावट महसूस होगी। इसलिए आप बाहर जाकर गेम खेलें या अपना हॉबी का कोई भी काम कर सकते हैं। यह आपको फिर से पढ़ाई में मन लगाने में मदद करेगा।

8. **पढ़ाई के साथ लिखने का अभ्यास करें:** परीक्षा की तैयारी में

किसी भी टॉपिक को पढ़ना जरूरी होता है, पर पढ़ाई के साथ-साथ जब आप उस टॉपिक को अपने शब्दों में लिखते हैं, अभ्यास करते हैं तो यही अभ्यास आपको परीक्षा हॉल में अच्छे अंक लाने के लिए मदद करता है। इसलिए आपको चाहिए कि पढ़ाई करें और पढ़ाई के साथ-साथ लिखने का अभ्यास भी बहुत करें ताकि परीक्षा हॉल में आपको इसका बहुत फायदा मिल सके।

9. **फास्ट फूड या जंक फूड से बचें:** आपको बाहर का खाना, फास्ट फूड, जंक फूड नुकसान पहुंचा सकता है इसलिए इस समय सबसे जरूरी बात यह है कि आपको घर का बना खाना ही खाना है अगर आप बीमार पड़ जाते हैं या कोई परेशानी बढ़ जाती है, तो आपका पुरा मेहनत बेकार चला जाएगा और आपका एक साल बर्बाद हो जायेगा।
10. **परीक्षा के तनाव से बचने की कोशिश करें:** परीक्षा की तनाव के कारण आप अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर नहीं दे पाते हैं इसलिए तनाव को खुद पर हावी ना होने दें। अगर आप तनाव महसूस कर रहे हैं कि मैंने अपना पुरा समय बर्बाद कर दिया है बहुत कम समय बचा है तैयारी के लिए। ऐसी स्थिति में आप खुद को प्रोत्साहित करें कि आप की तैयारी के लिए जो समय है वह पर्याप्त समय है और इस समय का सही से उपयोग करके आप अच्छे अंक ला सकते हैं और अपना पूरा ध्यान पढ़ाई पर फोकस करने की कोशिश करें। हमेशा सकारात्मक सोचें, नकारात्मक बातों को अपने दिमाग में जगह ना दें। हम उम्मीद ही नहीं आशा करते हैं कि अगर आप इन तरीकों से परीक्षा की तैयारी करते हैं तो आपको परीक्षा में सफलता अवश्य मिलेगी और आप जितना चाहते हैं उतने अच्छे अंक प्राप्त होंगे।



अत्यवस्था की उड़ान

ताजा घटना पटना की है, जिसमें दो यात्री नशे की हालत में पाए गए। वे नशा करके विमान में चढ़े थे और जब पटना हवाई अड्डे पर उनकी सांस जांची गई तो तथ्य सामने आया कि उन्होंने मदिरापान कर रखा था। उनके खिलाफ कानूनी कार्रवाई की गई। मगर सवाल है कि जब वे नशा करके या कोई नशीला पदार्थ साथ लेकर दिल्ली हवाई अड्डे पर पहुंचे, तब वहां के कर्मचारी इस तथ्य की जांच करने से कैसे चुक गए। इसके अलावा, पिछले दिनों दो घटनाएं हुईं, जिनमें मुसाफिरों ने ऐसी अशोभन हरकतें कीं, जिन्हें संचालक दल की सावधानी से रोका जा सकता था। न्यूयार्क से दिल्ली आ रहे एअर इंडिया के विमान में एक यात्री ने एक महिला सहयात्री से नशे की हालत में अभद्र व्यवहार किया। वह हवाई अड्डे से आसानी से निकल भी गया। फिर दिल्ली से गोवा जा रहे गो फस्ट के विमान में एक विदेशी सैलानी ने विमान परिचरिका से छेड़छाड़ करने की कोशिश की। एक विचित्र घटना यह सामने आयी कि सोमवार को बंगलुरु हवाई अड्डे पर विमानन कंपनी गो फस्ट के एक विमान ने करीब पचास यात्रियों के सवार होने से पहले ही दिल्ली के लिए उड़ान भर लिया। इस लापरवाही के लिए अब भले ही कंपनी ने यात्रियों से माफी मांगी है, लेकिन इससे हवाई यात्रा में पसर रही अव्यवस्था का ही पता चलता है। इन घटनाओं के मद्देनजर नागर विमानन महानिदेशालय यानी डीजीसीए ने नोटिस जारी किया है और सभी विमान सेवाओं को निर्देश जारी किया है कि वे किस तरह मुसाफिरों के साथ पेश आयें, जांच आदि में क्या सावधानियां बरतें। किसी भी विमान में इस तरह की घटना होती है, तो उससे वह पूरी कंपनी बदनाम होती है, इसलिए इन विमान कंपनियों ने निस्संदेह खुद भी कुछ सावधानी बरतने के उपाय किए होंगे। मगर सवाल है कि इस तरह की घटनाओं की नौबत ही क्यों आ रही है। इसकी पहली वजह तो यही है कि प्रतिस्पर्धी कारोबार के चलते तमाम निजी विमानन कंपनियां मुसाफिरों को आकर्षित करने का प्रयास खूब करती हैं और इसमें किराए को लेकर सबसे अधिक बदलाव किये जाते हैं। निजी विमानन कंपनियों को उड़ान के घंटे और अपने बेड़े में विमानों की संख्या बढ़ाने संबंधी नियमों को भी पहले से काफी लचीला बना दिया गया है, जिसके चलते अब छोटे-छोटे शहरों के लिए भी विमान सेवाएं शुरू हो चुकी हैं। अब यह तथ्य छिपा नहीं है कि हवाई सेवाओं पर यात्रियों का दबाव तो बढ़ा है, मगर उस अनुपात में विमानन कंपनियों ने अपने संसाधन और सुविधाओं में विस्तार नहीं किया है। पिछले दिनों दिल्ली और मुंबई हवाई अड्डों पर सामान और मुसाफिरों की जांच में लगने वाले लंबे वक्त को लेकर बड़ी संख्या में शिकायतें आयीं तो संसदीय समिति और उड्डयन मंत्रालय को इस पर सक्रिय होना पड़ा। जाहिर है, इस तरह भीड़ को जल्दी जांच आदि कामों से निपटाने का प्रयास होगा, तो नशा करके या नशीले पदार्थ साथ लेकर चलने वालों को मौका मिलेगा ही। फिर, विमान के भीतर सुव्यवस्था बनाने की जिम्मेदारी चालक दल की होती है। अगर कोई मुसाफिर अभद्र व्यवहार करता है, तो जाहिर है, यह चालक दल की भी कमी है। कारोबारी होड़ ठीक बात है, मगर मुसाफिरों की सुरक्षा और सुविधा का ध्यान न रखा जाए, तो सवाल उठेगे ही।

पिछले एक-डेढ़ हफ्ते में कई भारतीय उड़ानों में मुसाफिरों के अशिष्ट व्यवहार और विमान संचालक दल की लापरवाही के मामले सामने आये।

भी कुछ सावधानी बरतने के उपाय किए होंगे। मगर सवाल है कि इस तरह की घटनाओं की नौबत ही क्यों आ रही है। इसकी पहली वजह तो यही है कि प्रतिस्पर्धी कारोबार के चलते तमाम निजी विमानन कंपनियां मुसाफिरों को आकर्षित करने का प्रयास खूब करती हैं और इसमें किराए को लेकर सबसे अधिक बदलाव किये जाते हैं। निजी विमानन कंपनियों को उड़ान के घंटे और अपने बेड़े में विमानों की संख्या बढ़ाने संबंधी नियमों को भी पहले से काफी लचीला बना दिया गया है, जिसके चलते अब छोटे-छोटे शहरों के लिए भी विमान सेवाएं शुरू हो चुकी हैं। अब यह तथ्य छिपा नहीं है कि हवाई सेवाओं पर यात्रियों का दबाव तो बढ़ा है, मगर उस अनुपात में विमानन कंपनियों ने अपने संसाधन और सुविधाओं में विस्तार नहीं किया है। पिछले दिनों दिल्ली और मुंबई हवाई अड्डों पर सामान और मुसाफिरों की जांच में लगने वाले लंबे वक्त को लेकर बड़ी संख्या में शिकायतें आयीं तो संसदीय समिति और उड्डयन मंत्रालय को इस पर सक्रिय होना पड़ा। जाहिर है, इस तरह भीड़ को जल्दी जांच आदि कामों से निपटाने का प्रयास होगा, तो नशा करके या नशीले पदार्थ साथ लेकर चलने वालों को मौका मिलेगा ही। फिर, विमान के भीतर सुव्यवस्था बनाने की जिम्मेदारी चालक दल की होती है। अगर कोई मुसाफिर अभद्र व्यवहार करता है, तो जाहिर है, यह चालक दल की भी कमी है। कारोबारी होड़ ठीक बात है, मगर मुसाफिरों की सुरक्षा और सुविधा का ध्यान न रखा जाए, तो सवाल उठेंगे ही।

भारत के वैज्ञानिक कार्याकल्प के उत्प्रेरक विवेकानंद



अमरदीप यादव

12 जनवरी 2006 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ

एपीजे अब्दुल कलाम रामकृष्ण मिशन पोरबंदर में स्वामी विवेकानंद की 143वीं जयंती पर विवेकानंद इंस्टीट्यूट ऑफ वैल्यू एडुकेशन एंड कल्चर (विवेक) के उद्घाटन में बतौर मुख्य अतिथि थे। डॉ कलाम ने अपने संबोधन में कहा कि टाटा फाउंडेशन की एक प्रदर्शनी में उन्होंने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस बैंगलोर के निर्माण के लिए जमशेदजी नसरवानजी टाटा और स्वामी विवेकानंद के बीच हुए पत्राचार के पत्रों को देखा और वे एक साधु की दूरदृष्टि और व्यापक सोच का प्रशंसक हो गए।

25 जुलाई 2020 को रामकृष्ण आश्रम राजकोट के अध्यक्ष स्वामी निखिलेश्वरानंद सत्संग की प्रश्नोत्तरी सत्र में इस ऐतिहासिक संस्मरणों को विस्तार से बताते हैं कि इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंसेज, बेंगलुरु की स्थापना के पीछे विवेकानंद की प्रेरणा थी।

31 मई 1893 को दो भारतीय जापान के योकोहामा से कनाडा के वैंकूवर तक पानी की जहाज पर एक साथ यात्रा कर रहे थे। दोनों अपने क्षेत्रों में बहुत भिन्न थे, एक संन्यासी शिकागो धर्म सभा में भाग लेने जा रहे थे और उद्योगपति जमशेदजी शिकागो में एक औद्योगिक प्रदर्शनी के लिए जा रहे थे। इस दौरान विवेकानंद ने जमशेदजी को विज्ञान के प्रति अपनी व्यापक सोच को बताया कि विज्ञान का उद्देश्य बाह्य दृश्यमान विविधता के मध्य विद्यमान एकत्व की खोज ही है। रसायनशास्त्र का अंतिम लक्ष्य ऐसे एक मूलतत्त्व की खोज है जिससे सभी बदरगाह के रहस्य का पता चल सके। भौतिक विज्ञान एकत्व ऊर्जा की खोज में तन है। यह आध्यात्मिक लगनेवाली बात पूर्णतः वैज्ञानिक है। यह भारतीय वैज्ञानिक जीवनदृष्टि है। इसी का प्रयोग



यात्रा के पांच वर्षों बाद नवंबर 23, 1898 को जमशेदजी टाटा ने स्वामी विवेकानंद को पत्र लिखकर यह स्मरण करवाया कि उस जहाज यात्रा की उनकी चर्चा अब सार्थक होगी क्योंकि टाटा ने भारतीय विद्यार्थियों के लिए एक विज्ञान शोध संस्था बनाने का निश्चय किया है। टाटा ने उस दौर में 2 लाख स्टर्लिंग पाउंड (30 लाख रुपये) की राशि इस कार्य के लिए समर्पित की है शेष 44 लाख के लिए आपके अपील की जरूरत है।

जितना भौतिक विज्ञान में हुआ उतना ही धर्म में हुआ। अतः भारत का धर्म वैज्ञानिक है और विज्ञान धार्मिक। इतमें आपस में कोई विरोधाभास नहीं है। इसी कारण 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ तक भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी केवल उन्नत ही नहीं सर्वव्यापक थी। अंग्रेजों की नीतियों ने इस समृद्ध वैज्ञानिक परम्परा को नष्ट किया। ब्रिटिश शासन उच्च शिक्षा, अंतरराष्ट्रीय तकनीक और शोध प्रवाह भारत में स्थापित करना नहीं चाहते हैं। आपका प्रयास भारत में ऐसी अंतरराष्ट्रीय विज्ञान शोध संस्थान खोलने की होनी चाहिए, जमशेदजी इस विचार से काफी प्रभावित और प्रेरित हुए।

दोनों उसके बाद योकोहामा से वैंकूवर के कनाडाई बंदरगाह के लिए एसएस एम्प्रेस ऑफ इंडिया पर यात्रा शुरू किया। वे 25 जुलाई 1893 तक सहयात्री थे।

यात्रा के पांच वर्षों बाद नवंबर 23, 1898 को जमशेदजी टाटा ने स्वामी विवेकानंद को पत्र

अभिमत आजाद सिपाही



डॉ तपन कुमार शांडिल्य

भाषा किसी भी देश की संस्कृति का अक्षय कोष होती है। भाषा परम्परा संस्कृति और आधुनिकता के पथ पर गतिमान होकर परिवर्तनशील होती है। वस्तुतः भाषा समाज और परंपरा को जोड़े रखने का प्रेम बंधन भी है। वह भटकाव में आस्था की अक्षय ज्योतिर्मय मार्गदर्शक स्तम्भ भी है, सौम्य और सर्जनात्मकता का अपराजेय संकल्प हिंदी की बुनियादी प्रकृति है। हिंदी भाषा को भाषा वैज्ञानिकों ने स्थूल रूप से सामान्य और प्रयोजन में विभक्त किया है, सुखद सूचना यह है कि हिंदी की इस नितांत ताजा टटकी और भाषिक संरचना स्वरूप को विश्व स्तर पर सम्मान मिला है।

हिंदी के लिए चीन अब हिमालय पार नहीं रहा। पाकिस्तान में इसने अपने होने का परचम लहरा दिया है, समुद्र पार जाकर अब यह विश्व के अनेकानेक महाद्वीपों में इंटरनेट, ई-मेल एवं कंप्यूटर के माध्यम से अपनी सामर्थ्य का एहसास कराकर अब विश्व ग्लोब पर हिंदी पूरी तरह स्थापित हो चुकी है। अर्थात् विश्व धरातल पर ज्ञान एवं व्यवहार के नए-नए खुलते क्षितिजों से जन्मी अपेक्षाओं के सन्दर्भ में, आधुनिक

हिंदी भाषा ने अर्थवत्ता का एहसास कराया है। हिंदी भाषा की

उपादेयता इस बात से प्रमाणित होती है कि यह हमारे बहुसंख्य लोगों की भाषा है, साहित्यकार व कवियों की भाषा है, लोकप्रिय फिल्मों की भाषा है, इसमें विज्ञान और व्यापार की अद्यतन जानकारीयां भी हैं। यह वोट

मांगने की इकलौती सशक्त भाषा है।

गुलामी के बाद पश्चिम के समृद्ध समाज

से कदम से कदम मिलाने की चाह ने

अंग्रेजी को अपनाया, अंग्रेजीयत को ओढ़ा लेकिन अंग्रेजी से आत्म गौरव और लोगों

को प्यार का अनुभव नहीं हुआ। आज



विश्व धरातल पर ज्ञान एवं व्यवहार के नए-नए खुलते क्षितिजों से जन्मी अपेक्षाओं के सन्दर्भ में, आधुनिक हिंदी भाषा ने अर्थवत्ता का एहसास कराया है। हिंदी भाषा की उपादेयता इस बात से प्रमाणित होती है कि यह हमारे बहुसंख्य लोगों की भाषा है, साहित्यकार व कवियों की भाषा है, लोकप्रिय फिल्मों की भाषा है, इसमें विज्ञान और व्यापार की अद्यतन जानकारीयां भी हैं। यह वोट मांगने की इकलौती सशक्त भाषा है।

राष्ट्रीय क्षितिज पर हिंदी का बहुआयामी स्वरूप



हिंदी जन भाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा के सोपानों को पार करके विश्व भाषा बनने को अग्रसर है। हिंदी की नयी पीढ़ी सक्षम है। उसका फलक बढ़ा है उसे इंटरनेट जैसा सशक्त माध्यम मिला है, जिसने दुनिया को उसकी मुठ्ठी में समेट दिया है। हिंदी की ताकत बढ़ रही है।

दिखावा और आत्म गौरव के बीच द्वंद्व है और इन सब के मध्य हिंदी हमारी अस्मिता हमारे आत्म गौरव की भाषा है।

भाषाओं का बने रहना इसलिए भी जरूरी है क्योंकि वह अभिव्यक्ति को सौ फीसदी तक परिपूर्ण और सहज बनाती हैं। ये नहीं होंगी तो वैभवशाली संपर्क भाषाएं अपितु व्याकरण से हमारा तात्पर्य सामाजिक इकाइयों और संरचनाओं से है जो स्थिर नहीं रहती समयानुसार बदलती रहती है।

यूनेस्को की एक रिपोर्ट बताती है कि हर वर्ष संसार से अनेक जैविक प्रजातियों की तरह बीसियों भाषाएं भी सदा के लिए लुप्त होती जा रही हैं, अंततः कुछ बड़ी सक्षम भाषाएं ही शायद बची रह जाएं और जो योग्यमम सिद्ध होगा वही टिकेगा।

यह भी सच है कि हिंदी के उद्भव और विकास का समूचा कालखंड उसके लिए निहायत प्रतिकूल रहा है, स्वाधीनता से पूर्व

तक यह प्रायः राज्याश्रय विहिन ही रही।

हिंदी मूलतः भारतीय जन की और जन्म प्रतिरोध की ही भाषा रही है लेकिन वर्तमान सांस्कृतिक भूमंडलीकरण ने हिंदी के समक्ष अत्यंत गंभीर तथा अभूतपूर्व चुनौती प्रस्तुत की है। स्वतंत्रता के पूर्व वह कभी राजभाषा या राज्याश्रय प्राप्त भाषा नहीं थी पर वह जन प्रतिरोध की भाषा, जन आकांक्षा का खुला मंच और इस महादेश के संक्षिप्त, सामासिक, संस्कृति की सशक्त पहचान बनकर जन भाषा बनी। प्रत्येक क्षेत्र में हिंदी की उपस्थिति उसकी विलक्षण क्षमता का परिचायक है।

हिंदी विश्व पटल पर अपने महती अस्तित्व को उजागर कर रही है। बीसवीं सदी के अंतिम वर्षों में सूचना क्रांति के तहत संपूर्ण विश्व में एकीकरण हुआ फलस्वरूप हिंदी, ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान, वाणिज्य, व्यापार, बाजार, संचार और प्रौद्योगिकी की सक्षम भाषा के रूप में विकसित हो जाती है।

हिंदी का सामना आज नये प्रश्नों में स्वरूपों से हो रहा है, हिंदी ने पिछले कुछ दशकों में असंख्य दिशाओं में असंख्य यात्राएं की है, सहसा यह विश्वास नहीं

जमशेदपुर की खबरें

हेमंत सरकार में महिलाओं को मिल रहा है सम्मान : मंगल कालिंदी

जुगसलाई विधानसभा क्षेत्र के पंचायत स्तरीय महिला समूह के सम्मेलन में शामिल हुए विधायक

आजाद सिपाही संवाददाता

जमशेदपुर। पूर्वी सिंहभूम जिले के जुगसलाई विधानसभा स्थित खकड़ीपाड़ा पंचायत में महिला समूह द्वारा पंचायत स्तरीय महिला समूह सम्मेलन का आयोजन किया। बुधवार को आयोजित महिला समूह के सम्मेलन में मुख्य अतिथि सतारूढ़ दल के सचेतक सह लोकप्रिय विधायक मंगल कालिंदी शामिल हुए। सम्मेलन के दौरान आजसू पार्टी की महिला नेत्री बुलबुल दास व जयश्री घोस के नेतृत्व में सैकड़ों की संख्या में महिला समूह के सदस्य शामिल रहे। मौके पर उपस्थित महिलाओं ने राज्य के युवा मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नेतृत् में हो रही विकाश कार्य व विधायक मंगल कालिंदी के कुशल नेतृत्व से प्रभावित होकर झामुमो झामुमो का दामन थामने का फैसला कर लिया। उन्होंने वर्तमान हेमंत सरकार में महिलाओं की सम्मान को देखते हुए झारखंड मुक्ति मोर्चा के



सदस्यता ग्रहण की।

इस अवसर पर सैकड़ों महिलाओं को विधायक मंगल कालिंदी की उपस्थिति में झामुमो की सदस्यता दिलाई गई। मौके पर विधायक मंगल कालिंदी ने कहा हेमंत सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से राज्य में महिलाओं को सशक्त कर रहे हैं। उन्होंने कहा झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने बीते दिनों रांची के मोरहाबादी मैदान मे कई योजनाओं की सौगात दी। उन्होंने महिला सुरक्षा पर बल देते हुए महिला हेल्पलाइन 181 का शुभारंभ किया। सीएम हेमंत सोरेन की पत्नी कल्पना सोरेन ने महिला सशक्तीकरण को लेकर सखी

मंडल की दीदियों को ऋण की राशि दी। 30 हजार सखी मंडलों को 300 करोड़ की राशि बैंक लिंकेज के जरिए दिया गया। विधायक मंगल कालिंदी ने कहा जुगसलाई विधान सभा क्षेत्र के महिलाएं आगे आएं। हेमंत सरकार के प्रति हैट जोड़कर आभार प्रकट करेगी। ताकि महिलाओं का एक मजबूत संगठन बन सके। इस अवसर पर विधायक ने झामुमो में शामिल होने वाले सभी महिलाओं के प्रति हैट जोड़कर आभार प्रकट किया। विधायक मंगल कालिंदी ने सभी महिलाओं को एकजुट होकर ग्रामीण क्षेत्र के अंतिम व्यक्ति तक सरकार की सैकड़ों योजनाओं का

लाभ पहुंचाने की अपील की। मौके पर उपस्थित मुखिया संघ के जिला अध्यक्ष पलटन मुर्मू ने कहा विधायक मंगल कालिंदी के नेतृत् में जुगसलाई विधान सभा क्षेत्र में विकास कार्य व क्षेत्र की समस्याओं का समाधान तेजी से हो रहा है। जनता की समस्याओं को पूरा करने का काम हर हाल में झामुमो करेगा। मौके पर मुखिया चांदमनी बारदा, सागर महतो, घासीराम बारदा, पंकज गोप, रवि भक्त, यमुना हो का योगदान रहा। कार्यक्रम में मुखिया संघ जिला अध्यक्ष पलटन मुर्मू, ग्राम प्रधान कृष्ण मांझी, सुभाष कर्मकार, संजय दास, आलोक भगत, अश्वित गोप सहित सैकड़ों महिलाएं उपस्थित थीं।

आजाद सिपाही

रांची, गुरुवार, 12 जनवरी, 2023

www.azadsipahi.in

06



को रिहा करने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान लगभग 100 से अधिक बैंक कर्मी शामिल रहे। सभी ने पीएनबी के सुरक्षाकर्मी अशोक कुमार यादव की अविलंब रिहाई की मांग की। साथ ही दोषी पुलिस अधिकारी पर

उच्चस्तरीय जांच कर उचित कानूनी कार्रवाई की मांग की। इस संबंध में 7 जनवरी को राज्य के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के नाम एक पत्र भी सौंपा गया। उन्होंने कहा बैंक द्यूटी में तैनात सुरक्षकर्मी का रिहाई जल्द नहीं की गई तो



महत्वपूर्ण न्यूज

झामुमो कार्यकर्ताओं ने कंबल वितरण कर मनाया दिशोम गुरु का जन्मदिन



गढ़वा (आजाद सिपाही)। गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर के गढ़वा स्थित आवास पर झामुमो सुप्रीमो दिशोम गुरु शिबु सोरेन की जन्मदिन मनाया गया। झामुमो नेताओं एवं कार्यकर्ताओं ने केक काटकर एवं मिठाई बांटकर जन्मदिन मनाया। इस दौरान मंत्री श्री ठाकुर के आवास पर 500 गरीब एवं असहाय परिवारों के बीच कंबल वितरण किया गया। तत्पश्चात झामुमो कार्यकर्ताओं ने सदर अस्पताल में रक्तदान शिविर एवं मरीजों के बीच फल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया। मंदिर में हवन पूजन कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। मौके पर झामुमो प्रदेश प्रवक्ता धीरज दुबे, बीस सुन्नी जिला उपाध्यक्ष नितेश सिंह, जिला अध्यक्ष तनवीर आलम, जिला सचिव मनोज ठाकुर, परेश तिवारी, कंचन साहु, अनीता दत्त, सत्यनारायण यादव, नवीन तिवारी, आशुतोष पांडेय, निर्मल पासवान, शम्भू चन्द्रवंशी, फुजैल अहमद, शरीफ अंसारी, अरविन्द यादव, कामेश्वर चौधरी, विकास सिंह कुशवाहा, आलमगीर आलम, गुड्डू सिद्दीकी, मुमताज अंसारी, विनोद चन्द्रवंशी, फैजुल अंसारी, भीष्मच चन्द्रवंशी, संजय सिंह उर्फ छोटू, फखरे आलम खां, शीला तिवारी, ओमप्रकाश गुप्ता, अरविन्द पटवा, अमृत शुक्ला, जितेन्द्र दुबे, अभिषेक दुबे, तहजीब खां, जमीला बीबी, मुन्ना तिवारी, राजेन्द्र पाण्डेय, दिनेश दुबे, भोलू अंसारी, जमील अहमद, रजनीगंधा, सोनो देवी, अहमद अली, विवेक सिंह, अमित सिंह, चंदन पासवान, कौस्तुभ, सुरज चन्द्रवंशी, सदान अंसारी, नुरुलहोदा सहित काफी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

कार्यकर्ताओं ने भाजपा विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी का 65वां जन्मदिन मनाया



बंशीधर नगर (आजाद सिपाही)। पूर्व मंत्री सह भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य रामचन्द्र केशरी के चेचरिया स्थित आवासीय कार्यालय पर भाजपा कार्यकर्ताओं ने बुधवार को झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री सह भाजपा विधायक दल के नेता बाबूलाल मरांडी का 65वां जन्मदिन समारोह का आयोजन किया गया। जन्मदिन समारोह का शुभारंभ केक काटकर किया गया। जन्मदिन समारोह को संबोधित करते हुये वक्ताओं ने कहा कि बाबूलाल मरांडी झारखण्ड के विकास पुरुष के रूप में जाने जाते हैं। शिक्षा ग्रहण करने के बाद वे प्राथमिक शिक्षक के रूप में भी काम किये। ये स्व. अटल बिहारी वाजपेयी के मंत्रिमंडल में वन व पर्यावरण मंत्री के रूप में शपथ लिये। 15 नवम्बर 2000 को जब झारखण्ड प्रदेश का गठन हुआ तो झारखण्ड प्रदेश के प्रथम मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लिये। इन्होंने रांची को ग्रेटर रांची बनाने, जनकल्याण विभाग से गरीबों के लिये बस योजना, प्राकृतिक संपदा बालू को समस्त झारखंडियों के लिये मुफ्त करने जैसे महत्वपूर्ण कार्य किये। वर्ष 2020 में झारखण्ड भाजपा विरोधी दल के नेता चुने गये। सभी वक्ताओं ने उनके दीर्घायु जीवन की कामना किया। जन्मदिन समारोह को भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य शारदा महेश प्रताप देव,विजय कुमार केसरी, सूरज गुप्ता, रघुराज पांडेय, शिवधारी राम, ओमप्रकाश गुप्ता, रविन्द्र कुमार पासवान, आनन्द कमलापुरी, कुमार कनिष्क सहित अन्य ने संबोधित किया। कार्यक्रम के अंत में गरीब, असहाय, निःशक्तों के बीच टंड से बचाव के लिये कम्बल का वितरण किया गया. मौके पर विधायक प्रतिनिधि अशोक सेठ,मधुरा पासवान, सीताराम जायसवाल, नंदकिशोर यादव, रामेश्वर राम,सोबराती खां, सेवानिवृत्त शिक्षक शिवशंकर प्रसाद,संतोष चंद्रवंशी, रामेश्वर राम, धीरज जायसवाल, सलीम अंसारी, अरुण कुमार, नंदकिशोर प्रसाद, रमेश प्रसाद, सोबरन चंद्रवंशी, उमाशंकर प्रसाद, कमला सिंह, रमसाधल अंसारी, सुजितलाल अग्रवाल, सरोज सेठ, इंद्रजीत कुशवाहा सहित बड़ी संख्या में महिला व पुरुष उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता मंडल अध्यक्ष कुमार कनिष्क व संचालन मो. नईम खलीफा ने किया।

कार्यक्रम : सांसद वीडी राम ने कांडी प्रखंड के विभिन्न पंचायतों का दौरा कर ग्रामीणों की समस्याओं की ली जानकारी

पीएमजीएसवाइ योजना से विशेष मरम्मती के तहत दो सड़क निर्माण का किया शिलान्यास

कहा- यह आपकी घर की योजना है, इसे खड़ा होकर आप सभी बनवायें

आजाद सिपाही संवाददाता

कांडी। पलामू सांसद वीडी राम ने बुधवार को कांडी प्रखंड का दौरा किया। सांसद व भाजपा नेता ईश्वर सागर चंद्रवंशी उर्फ मुन्ना चंद्रवंशी ने संयुक्त रूप से पीएमजीएसवाइ योजना से विशेष मरम्मती के तहत दो सड़क निर्माण का शिलान्यास किये। 2.09 करोड़ की लागत से दोनों सड़कों का निर्माण होगा। 84 लाख की लागत से हरीगांवा मोड़ से घोड़दग 3.30 किलोमीटर व 1.25 करोड़ की लागत राशि से पिपरडीह मोड़ से सुगवादामर 4.200 किलोमीटर लम्बी सड़क शामिल है। उन्होंने उपस्थित लोगों से कहा कि यह आपकी घर की योजना है, इसे खड़ा होकर आप सभी बनवायें। सांसद आपके पंचायत में



कार्यक्रम के तहत सांसद वीडी राम प्रखंड के चार पंचायत चटनियां, लमारी कला, घटहुआं कला व कांडी पंचायत का दौरा कर लोगों की समस्याओं से रूबरू हुए। उनके साथ विधायक रामचंद्र चंद्रवंशी के पुत्र सह भाजपा प्रदेश कार्यसमिति सदस्य ईश्वर सागर चंद्रवंशी उर्फ मुन्ना चंद्रवंशी भी उपस्थित थे। चटनियां पंचायत के कार्यक्रम में मुन्ना चंद्रवंशी ने कहा कि खेतों की सिंचाई की सुविधा के लिए सोन नदी से पाईप लाइन बिछाकर आपके खेतों तक सिंचाई की

प्रेस कांफ्रेंस : जिले के नौ उच्च विद्यालयों के सुदृढ़ीकरण के लिए छह करोड़ रुपये स्वीकृत

शिक्षा के विकास से ही विकसित समाज एवं विकसित राष्ट्र की कल्पना संभव : मिथिलेश

गोवावल उवि डुमरिया में कक्षा एवं चाहरदीवारी का भी होगा निर्माण

आजाद सिपाही संवाददाता

गढ़वा। जिले के नौ उच्च विद्यालयों की आधारभूत संरचना का विकास एवं सुदृढ़ीकरण के लिए छह करोड़, 41 लाख, तीन हजार, 137 रुपए की स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। इनमें अत्यंत महत्वपूर्ण योजना गढ़वा सदर प्रखंड के राजकीयकृत गोवावल उच्च विद्यालय डुमरिया की आधारभूत संरचना के साथ-साथ चहारदिवारी का भी निर्माण कार्य शामिल है।

जानकारी देते हुए गढ़वा विधायक झारखंड सरकार के पेयजल एवं स्वच्छता मंत्री मिथिलेश कुमार ठाकुर ने बताया कि जिले में अन्य सुविधाओं के साथ-साथ शिक्षा व्यवस्था दुरुस्त करने के लिए झारखंड सरकार ने प्राथमिकता के आधार पर नौ उच्च विद्यालयों के आधारभूत संरचना का विकास एवं सुदृढ़ीकरण करने की स्वीकृति प्रदान कर दी है। इनमें



राजकीय कृत उच्च विद्यालय डुमरिया, राजकीय कृत उच्च विद्यालय खरौंघा एवं उत्कर्मित उच्च विद्यालय उदयपुर रमकंडा प्रत्येक का एक करोड़, 38 लाख, 44 हजार 900 रुपए की लागत से उत्कर्मित प्लस टू उच्च विद्यालय भवन का निर्माण कार्य किया जाएगा। जबकि राजकीय प्राथमिक विद्यालय कोरटा का अतिरिक्त वर्ग कक्ष निर्माण के लिए 85 लाख, 21 हजार 700, मेगल प्रखंड के उत्कर्मित उच्च विद्यालय बाना, उच्च विद्यालय पेसका, गढ़वा प्रखंड का गोवावल उच्च विद्यालय डुमरिया का चहारदीवारी निर्माण के लिए एक करोड़, 33 लाख, 89 हजार 858 रुपए,

गांव-गांव में की जा रही है बेहतर शिक्षा की व्यवस्था

आज गढ़वा सहित पूरे राज्य में शिक्षा की बेहतरी के लिए कई कार्य किये जा रहे हैं। गांव-गांव में बेहतर शिक्षा की व्यवस्था की जा रही है। पहले गांव की छात्राएं नजदीक में व्यवस्था नहीं होने के कारण उच्च शिक्षा ग्रहण नहीं कर पाती थी। यहां तक कि अधिकांश छात्र भी प्राईमरी एवं माध्यमिक के बाद पढ़ाई छोड़ देते थे। परंतु अब छात्र-छात्राओं को अपने गांव, घर के नजदीक ही माध्यमिक एवं प्लस टू तक की बेहतर शिक्षा की व्यवस्था की जा रही है। उन्होंने कहा कि जब तक गरीबों के बच्चे पढ़ेंगे नहीं, हर क्षेत्र में शिक्षा का विकास नहीं होगा. तब तक विकसित समाज, विकसित राज्य एवं विकसित राष्ट्र की कल्पना नहीं की जा सकती है। मंत्री ने कहा कि आने वाले समय में अन्य विद्यालयों का भी विकास का कार्य किया जाएगा।

राजकीय कृत प्लस टू उच्च विद्यालय कांडी का सुदृढ़ीकरण के लिए चार लाख, 53 हजार, 760 रुपए तथा राजकीय कृत उच्च विद्यालय टाटींदीरी का सुदृढ़ीकरण के लिए दो लाख, तीन हजार, 119 रुपये की स्वीकृति प्रदान की गयी है। मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि इनमें गोवावल उच्च विद्यालय डुमरिया की अत्यंत ही महत्वपूर्ण योजना है। यह विद्यालय लंबे अरसे से उपेक्षित पड़ा हुआ था। यहां न तो बेहतर पढ़ाई के लिए आधारभूत संरचना उपलब्ध थी, और न ही इस विद्यालय की आज तक चहारदीवारी ही हो पाई थी। बताया जाता है कि इस क्षेत्र के पूर्व विधायक ने इसी विद्यालय से पढ़ाई

भी की थी। साथ ही उन्हें 10 वर्षों तक इस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करने का भी मौका मिला था। फिर भी यह विद्यालय अपनी बदहाली पर आंसू बहा रहा था। क्षेत्र के लोग विद्यालय की दयनीय स्थिति से काफी दुखी थे। परंतु अब यहां विद्यालय के विकास एवं निर्माण से क्षेत्र के लोगों में काफी खुशी है। चहारदीवारी नहीं होने के कारण छात्राएं भी काफी असुरक्षित महसूस कर रही थी। अब छात्र-छात्राओं सहित पूरा विद्यालय परिवार चहारदीवारी में सुरक्षित महसूस करेगा। मंत्री श्री ठाकुर ने कहा कि झारखंड सरकार सड़क, बिजली, पानी, चिकित्सा एवं शिक्षा सहित हर क्षेत्र में चौतरफा विकास कर रही है।

कोस्को क्रिकेट टूर्नामेंट में आरआरसीसी ने जीत दर्ज की

रंका (आजाद सिपाही)। अनुमंडल मुख्यालय स्थित राजकीयकृत प्लस टू उच्च विद्यालय के मैदान में रंकाज क्रिकेट क्लब के तत्वावधान में आयोजित कोस्को क्रिकेट टूर्नामेंट में आज का मैच आरआरसीसी बनाम बिश्रामपुर के बीच खेला गया। जिसमें आरआरसीसी ने पहले बैटिंग करते हुए 118 रनों की पारी खेली। जिसके जवाब में बिश्रामपुर की टीम 83 रनों में सिमट गई। इस प्रकार आरआरसीसी ने 35 रनों से जीत दर्ज की। मैन ऑफ द मैच के रूप में अमित कुमार को समाजसेवी अमरेंद्र कुमार ने मेडल देकर सम्मानित किया। जबकि निर्णायक की भूमिका में शनि मिश्रा, कमल पांडेय एवं कमेंट्री में राकेश चंद्रवंशी ने सराहनीय भूमिका निभाई।

कार्यपालक अभिरंता का कार्यालय

ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला

अति अल्पकालीन निविदा आमंत्रण सूचना

संख्या 38 / 2022–23

1.	विज्ञापन दाता का नाम	—	कार्यपालक अभिरंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला।
2.	परिमाण विपत्र विक्री की तिथि	—	दिनांक 20.01.2023 एवं दिनांक 21.01.2023 को 10.00 बजे पूर्वाह्न से 03.00 बजे अपराह्न तक।
3.	निविदा प्राप्त करने की तिथि	—	दिनांक 24.01.2023 को 3.00 बजे अपराह्न तक।
4.	निविदा खोलने की तिथि	—	दिनांक 25.01.2023 को 3.30 बजे अपराह्न तक।
5.	परिमाण विपत्र विक्री का स्थान	—	कार्यपालक अभिरंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला।
6.	निविदा प्राप्त करने का स्थान	—	कार्यपालक अभिरंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला।
7.	निविदा खोलने का स्थान	—	कार्यपालक अभिरंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला।
8.	कार्य मद	—	(SCA & PMAAGY) प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना मद
9.	कार्यों का विस्तृत विवरण	—	

सु. सं.	प्रखण्ड	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि	अग्रघन की राशि	परिमाण विपत्र का मूल्य	कार्य पूर्ण करने की अवधि
1	2	3	4	5	6	7
1	DUMRI	CONSTRUCTION OF HALL WITH INCLINED ROOF ON BASIS OF TRUSS AND G.C.I. SHEET AT KGBV DUMARI, BLOCK- DUMRI	24,63,600.00	50,000.00	5,000.00	03 माह
2	DUMRI	CONSTRUCTION OF EXTENSION OF HALL WITH INCLINED ROOF ON BASIS OF TRUSS AND G.C.I. SHEET AT KGBV DUMARI, BLOCK- DUMRI	24,98,800.00	50,000.00	5,000.00	03 माह
3	BASIA	RENOVATION OF AWC AND CHABUTRA AT KUMHARI	18,11,600.00	36,500.00	5,000.00	01 माह
4	BASIA	RENOVATION OF AWC AND CHABUTRA AT KARALOYA	19,87,300.00	40,000.00	5,000.00	01 माह
5	GUMLA	REPAIR OF GOVT SCHOOL CHOTA LORO	15,12,300.00	30,500.00	5,000.00	01 माह

निविदा की शर्तें— 1. ग्रामीण विकास विभाग के समुचित श्रेणी के अधीन निबंधित संवेदक ही इस निविदा में भाग ले सकते है एवं परिमाण विपत्र निर्गत किया जाएगा। 2. परिमाण विपत्र का शुल्क परिमाण विपत्र में अंकित राशि के अनुसार आवदन के साथ बैंक ड्राफ्ट के रूप में जो कार्यपालक अभिरंता, ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला के नाम पर होगा, एवं अदावगी पर (जो नहीं लौटाया जाएगा) परिमाण विपत्र निर्गत किया जाएगा। बैंक ड्राफ्ट निबंधित संवेदक के स्वयं के खाता द्वारा निर्गत हुआ होगा एवं बैंक ड्राफ्ट की वैधता निविदा की वैधता के बराबर अनिवार्य होगा। 3. निविदा में 10% न्यूनतम दर से अधिक न्यूनतम दर उद्धृत दर करने पर प्राक्कलित राशि का अतिरिक्त अग्रघन राशि का डाकघर पासबुक / बैंक द्वारा निर्गत फिक्स डिपोजिट निविदा के साथ जमा करना अनिवार्य होगा।

जो निम्न है— 1. 10 से 20 प्रतिशत कम दर तक की राशि का 20% तक। 2. 20% प्रतिशत से अधिक कम दर की राशि का 30% अतिरिक्त जमानत का देय होगा। 3 निविदा में 100% न्यूनतम दर से अधिक न्यूनतम दर उद्धृत दर करने पर संवेदक को कार्य करने का Justification का शायथ पत्र देना अनिवार्य होगा। 4. निविदा की विस्तृत शर्तें www.jharkhand.gov.in एवं कार्यालय की सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभिरंता
ग्रामीण विकास विशेष प्रमंडल, गुमला

PR 287235 Rural Development (22-23)_D



बीएसएफ जवान की सड़क दुर्घटना में मौत

राहे (आजाद सिपाही)। प्रखंड के सताकी पंचायत के श्रीमंटंगरा गांव निवासी बीएसएफ के 29 वर्षीय जवान गोपाल मुंडा की सड़क दुर्घटना में मौत हो गयी उसके शव को लेकर बीएसएफ कर्मी गांव पहुंचे। जवानों ने सम्मान के साथ अपने गोपाल मुंडा का अंतिम संस्कार किया। 21 तोपों की अंतिम सलामी दी। बताते चलें कि जवान गोपाल मुंडा 7 जनवरी की शाम खेल गांव के समीप सड़क दुर्घटना में घायल हुए थे। उनका रिस्स अस्पताल में इलाज चल रहा था, जहां मंगलवार को मौत हो गई। बीएसएफ जवान गोपाल मुंडा 2012 में बीएसएफ 167 बटालियन में ज्वाइन किए थे। वर्तमान में इनकी पोस्टिंग छत्तीसगढ़ में थी। पांच जनवरी को छुट्टी लेकर घर आए थे और 7 को घर के काम से रांची गए थे।

बिजली के हाई टेंशन तार की चपेट में आकर मिस्त्री की मौत

सिल्ली (आजाद सिपाही)। सिल्ली में 11 हजार वोल्ट के बिजली के हाई टेंशन तार की चोट में आने से बुधवार को एक बिजली मिस्त्री की मौत हो गई। उसकी पहचान शक्ति महतो (35) के रूप में हुई है। जानकारी के मुताबिक शक्ति महतो मुरी के संत माइकल स्कूल के नए भवन के नजदीक ट्रांसफार्मर पर काम कर रहा था। तभी 11 हजार वोल्ट के तार के संपर्क में आकर घटनास्थल पर ही गिर गया। उसे गंभीरअवस्था में सिंगपूर नर्सिंग होम ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। जेई ने बताया कि वह विद्युत विभाग के आउट सॉर्सिंग कंपनी जय माता दी का कर्मचारी था। मामले की जांच की जा रही है।

नये महिला छात्रावास की मांग को लेकर सौंपा गया ज्ञापन

बुंडू (आजाद सिपाही)। 300 बेड के नए महिला छात्रावास की मांग की लेकर महाविद्यालय छात्रसंघ के छात्र नेता सुरेंद्र लोहरा के नेतृत्व में पांच परगना किसान महाविद्यालय बुंडू के प्राचार्य को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञात हो कि पांच परगना किसान महाविद्यालय बुंडू इकलौता सरकारी महाविद्यालय है जहां छात्राओं की संख्या लगभग एक हजार से अधिक है। किसान, मजदूर, रिक्शा, चालक, श्रमिक आदि परिवार के बच्चे विशेषकर शिक्षा अध्ययनरत करते है। ऐसी स्थिति में छात्राएं सुरक्षित और उच्चजल भविष्य कैसे देख सकती है। आदिवासी छात्र संघ के नेता सुरेंद्र लोहरा का कहना है कि महाविद्यालय की सभी छात्राओं को हॉस्टल मिले, ताकि छात्राएं सुरक्षित और आसानी से शिक्षा प्राप्त कर सकें।

आदिवासियों की परंपरा और रीति-रिवाज नहीं मानने वालों को उनका हक लेने का भी कोई अधिकार नहीं धर्मांतरण के खिलाफ जागना होगा, नहीं तो भागना पड़ेगा : कोचे मुंडा

हिंदू जगारण मंच के सरना सनातन सम्मेलन में उमड़ी लोगों की भीड़

आजाद सिपाही संवाददाता खूटी। हिंदू जागरण मंच के क्षेत्रीय संगठन प्रमुख डॉ सुमन ने कहा कि भारत में रहकर भारतीय परंपरा को जानिये। भारत हमारी मातृभूमि, देवभूमि और मोक्ष भूमि है। डॉ सुमन बुधवार को रनिया के डाबंगला मैदान में विश्व हिंदू जागरण मंच के तत्वावधान में आयोजित सरना सनातन सम्मेलन को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि कहीं न कहीं सरना और सरना समाज सो रहा है। इसे हर हाल में जगाना होगा। यही काम हिंदू जागरण मंच कर रहा है। कहा कि मैं इंडोनेशिया के जकार्ता का रहनेवाला था। मुझे चर्च की ओर से धर्मांतरण के लिए भारत भेजा गया था। इसके पहले न तो मैं भारतीय परंपरा और चिंतन न ही को जानता था और न मानता था, लेकिन यहाँ आने पर मुझे भारत के बारे में जानकारी मिली

खलारी झामुमो ने धूमधाम से मनाया दिशोम गुरु शिबू सोरेन का 79वां जन्मदिन

गुरुजी की ही तरह निडर होकर राज्य के विकास का सहभागी बनें झामुमो कार्यकर्ता : राजकिशोर

आजाद सिपाही संवाददाता

खलारी। करकट्टा स्थित झामुमो खलारी प्रखंड कार्यालय में बुधवार को झामुमो के केंद्रीय अध्यक्ष सह झारखंड के पूर्व मुख्यमंत्री एवं वर्तमान राज्यसभा सांसद दिशोम गुरु शिबू सोरेन का 79वां जन्मदिन बड़े धूमधाम से मनाया गया। जिसकी अध्यक्षता झामुमो खलारी प्रखंड अध्यक्ष अनिल पासवान ने की। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड आंदोलनकारी सह पार्टी के पूर्व केंद्रीय सदस्य एवं खलारी कोयलांचल में मास्टर जी के नाम से मशहूर राजकिशोर राम पासवान भी मौजूद थे। वहीं विशिष्ट अतिथि झामुमो वरिष्ठ नेता सह रांची जिला के पूर्व उपाध्यक्ष नंदु मेहता सहित कई गणमान्य झारखण्ड आंदोलनकारी उपस्थित थे।



कार्यक्रम में उपस्थित झामुमो के पदाधिकारी, कार्यकर्ता-समर्थक व अन्य।

कार्यक्रम की शुरुआत में मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों के द्वारा केक काटकर झामुमो सुप्रीमो शिबू सोरेन का जन्मदिन मनाया। जिसके बाद उपस्थित कार्यकर्ताओं एवं लोगों के बीच केक वितरण किया गया। कार्यक्रम में खलारी प्रखंड के विभिन्न पंचायतों से आए सैकड़ों बुजुर्ग, लाचार, असहाय गरीब, वृद्ध महिलाओं एवं पुरुषों के बीच कंबल का

वितरण भी किया गया। अपने संबोधन के दौरान राजकिशोर राम पासवान ने कहा कि गुरुजी का सिर्फ जन्मदिन मनाने से हम सफल नहीं होंगे, बल्कि उनके बनाए गए नक्शे कदम पर चलकर ही हम सफल हो सकते हैं। उन्होंने कहा कि मैंने झारखंड आंदोलन की लड़ाई से लेकर अब तक कोयलांचल के साथ-साथ पूरे झारखंड में पूरी इमानदारी के साथ

अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। गरीब-गुर्मा व जरूरतमंदों की निःस्वार्थ भाव एवं बिना किसी भेदभाव के सेवा की। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि पूरी निष्ठा एवं पूरी ईमानदारी के साथ और बिना किसी अधिकारी से डरे लोगों का निःस्वार्थ भाव से काम करें तभी गुरुजी का सपना साकार होगा। पूरे कार्यक्रम का संचालन प्रखंड सचिव महेंद्र चौहान ने किया। कार्यक्रम में प्रखंड उपाध्यक्ष राजेश प्रसाद, सुभाष प्रजापति, दिनेश्वर सिंह, कलाम रिजवी, अरुण यादव, संयुक्त सचिव मुकेश यादव, राजकुमार भोगता, चित्तरंजन सिंह, कोषाध्यक्ष अध्यक्ष जैनुल खान, संगठन सचिव शितलाल महतो, मीडिया प्रभारी विशाल पासवान, कार्यालय सचिव छोटू राम, शंभू

दास, विक्की मुंडा, मनोज यादव, नवीन महतो, गणेश गोप, खड़क सिंह, गुलाम हुसैन, फागुन मुर्तजा अंसारी, मोहम्मद इस्लाम अंसारी, चूरी दक्षिणी पंचायत अध्यक्ष अजय मुंडा, हुटाप पंचायत अध्यक्ष गौतम यादव, मायापुर पंचायत सचिव दिलीप यादव, सुशील कुमार पासवान, रामाश्रय भुइयां, नागेंद्र सिंह, प्रमोद कुमार, हैदर खान, जब्बार अंसारी, रोहित कुमार यादव, महिला नेत्री कल मतिया देवी, पूर्व महिला प्रखंड अध्यक्ष मनीता देवी, अनीता देवी, बीना देवी, हीरामणि देवी, पूनम कुमारी, रूमा देवी, सुशीला देवी, कांता देवी, मालती देवी, जीरा देवी, झाड़ा देवी, श्रीदेवी सहित सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

तुमांग पंचायत को मैकलुस्कीगंज थाना में शामिल किये जाने का मुखिया ने किया विरोध, ग्राम सभा आज

आजाद सिपाही संवाददाता

खलारी। प्रखंड के तुमांग पंचायत मुखिया संतोष कुमार महली ने तुमांग पंचायत को मैकलुस्कीगंज थाना में शामिल किए जाने का कड़ा विरोध किया है। उन्होंने कहा कि तुमांग पंचायत से खलारी थाना की दूरी महज 3 से 4 किलोमीटर की है, लेकिन मैकलुस्कीगंज थाना सात किलोमीटर दूर है। पंचायत के आम ग्रामीणों को भी परेशानी बढ़ सकती है। जबकि खलारी थाना क्षेत्र में मुख्य बाजार होने से पंचायत क्षेत्र से वाहनों का



आवागमन की बेहतर व्यवस्था नहीं होने से लोगों को और भी परेशानी बढ़ सकती है। जबकि खलारी थाना क्षेत्र में मुख्य बाजार होने से पंचायत क्षेत्र से वाहनों का

आवागमन की सुविधा उपलब्ध है। लोगों का आना जाना भी सुरक्षित रहता है। इन्ही कारणों से किसी भी प्रकार की असुविधा होने पर ग्रामीण आसानी से खलारी थाना पहुंच सकते हैं। वहीं उन्होंने बताया कि गुरुवार को तुमांग पंचायत की एक विशेष ग्राम सभा पंचायत सचिवालय में सुबह 10 रखी गयी है। वहीं मुखिया संतोश कुमार महली ने तुमांग पंचायत के सभी ग्रामीणों से ग्राम सभा में समय पर पहुंच कर अपने विचारों रखने का आग्रह किया है।

अदिति राज ने वार्ट अकाउंटेंट की इंटरमीडियट परीक्षा में सफलता पायी

खलारी (आजाद सिपाही)। खलारी बाजारटांड निवासी छात्रा अदिति राज ने चार्टर्ड अकाउंटेंट की इंटरमीडियट परीक्षा में सफलता पायी है। पूरे देश से 37428 छात्रों ने सीए की इंटरमीडियट परीक्षा में भाग लिया था। जिसमें 12 फ़ीसदी 4759 छात्र ही सफल हो पाए। परीक्षा का परिणाम मंगलवार को घोषित हुआ।



आदिवासियों की परंपरा और रीति-रिवाज नहीं मानने वालों को उनका हक लेने का भी कोई अधिकार नहीं धर्मांतरण के खिलाफ जागना होगा, नहीं तो भागना पड़ेगा : कोचे मुंडा

सतर्क नहीं हुए तो चादर और फादर हमारा अस्तित्व खत्म कर देंगे : डॉ सुमन



हर दिन गांव में पांच लोगों के साथ बैठक कर उन्हें जागरूक करें : ऋषिनाथ शाहदेव

वहीं, मंच के प्रदेश अध्यक्ष ऋषिनाथ शाहदेव ने कहा कि सरना और सनातन धर्म को बचाना है तो हमें संगठित होना होगा। समाज के लोग हर दिन गांव के पांच लोगों के साथ बैठक करें और हिंदू जागरण मंच के बारे में जानकारी दें। उन्हें संगठित करें। कार्यक्रम का संचालन आरएसएस के प्रवर्तन प्रमुख संजय वर्मा, युवा वाहिनी के प्रमुख विक्रम शर्मा, अखिल भारतीय सरना समाज के केंद्रीय अध्यक्ष भीम सिंह मुंडा आदि ने भी संबोधित किया। इस मौके पर भाजपा के वयोवृद्ध नेता मनीनाथ मिश्रा, जिला सांसद प्रतिनिधि मनोज कुमार, मनोज सिंह, रणविजय सिंह, निखिल कंडुलना, नारायण साहू, जितेंद्र कश्यप, सुनील साहू, ज्योतिष भगत, बालमुकुंद कश्यप सहित काफी संख्या में सरना सनातन धर्मावलंबी आस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन संजय वर्मा ने किया। मौके पर विभिन्न गांवों के पाहनों को पगड़ी पहनाकर उन्हें सम्मानित किया गया। 10।1.2



होना। तय हुआ कि बूथ स्तर पर पार्टी को मजबूत बनाना है। बैठक में मंडल प्रभारी सतीश शाह, मंडल पालक शशिभूषण सिंह, सांसद प्रतिनिधि फुलेश्वर महतो, एसी मोर्चा प्रदेश मंत्री कमलेश राम, जिला ग्रामीण महामंत्री प्रीतम साहू, प्रदेश किसान मोर्चा मिडिया

प्रभारी विकास दुबे, विधायक प्रतिनिधि श्यामसुन्दर सिंह आदि थे।

कि भारत में रहना है, तो यहां की परंपरा को मानना होगा।

दूसरी ओर, तोपरा विधायक कोचे मुंडा ने कहा कि धर्मांतरण के खिलाफ सरना और सनातन समाज को जागना होगा, नहीं तो

नहीं चाहते, पर अपमानित होकर जीना भी नहीं चाहते। उन्होंने कहा कि धर्म परिवर्तन करने वालों को जाति प्रमाणपत्र जारी नहीं किया जाना चाहिए। ग्राम प्रधान बनने का हक भी इसाइयों को नहीं है। कहा

और मैं यहीं का होकर रह गया। उन्होंने कहा कि एक सच्चा सनातनी होने के नाते हमें बताना होगा कि भारतीय चिंतन और दर्शन विश्व का सर्वश्रेष्ठ चिंतन है। डॉ सुमन ने कहा कि जो राम का

नहीं वह किसी काम का नहीं है। कहा कि यदि हम सतर्क नहीं रहे, तो ये चादर और फादर हमें निगल जाएगा। कहा कि धर्मांतरण पाप है और इसे हर हाल में रोकना होगा। हम लड़ाई झगड़ा, दंगा-फसाद

महत्वपूर्ण न्यूज

पिपरवार में त्रिपक्षीय सुरक्षा समिति की बैठक में सुरक्षा व्यवस्था पर की गयी चर्चा



पिपरवार (आजाद सिपाही)। बचरा ऑफिसर्स क्लब में बुधवार को त्रिपक्षीय सुरक्षा समिति की बैठक हुई। जिसकी अध्यक्षता श्रमिक प्रतिनिधि भीम सिंह यादव और संचालन कार्मिक एवं प्रशासनिक अधिकारी आलोक मनीष सोय ने किया। बैठक में बतौर मुख्य अतिथि निदेशक (माइंस सेफ्टी) आफताब अहमद के अलावा उप निदेशक माइंस सेफ्टी हनुमंत राव, अजेश मोहम्मद, रविंद्र बोधा, विनित चौरसिया और आइएसओ मनीष मोहन उपस्थित थे। बैठक में पिपरवार जीएम सीबी सहाय ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। इसके बाद एजीएम निरंजन सेनापति ने स्वागत भाषण दिया। इसके बाद अशोक परियोजना के खान प्रबंधक सदाना सत्यनारायण ने प्रोजेक्ट स्क्रीन के माध्यम से पिपरवार क्षेत्र के भौगोलिक स्थिति के बारे में विस्तार से जानकारी दी। बैठक में कोयला खदान और मजदूरों की सुरक्षा से संबंधित कई बातों पर विस्तृत चर्चा की गई। वहीं, बैठक में उपस्थित श्रमिक प्रतिनिधियों ने भी सुरक्षा से संबंधित कई बातों को प्रमुखता के साथ उठाया। इस मौके पर अशोक परियोजना पदाधिकारी संजय कुमार, स्टॉफ ऑफिसर सिविल प्रशांत कुमार साहू, स्टॉफ ऑफिसर विद्युत एवं यांत्रिक एके पाठक, स्टॉफ ऑफिसर एक्सानेशन, जीएस शर्मा, स्टॉफ ऑफिसर फ़ाइनैंस पीके साहू, स्टॉफ ऑफिसर पीएंडपी डीके शर्मा, स्टॉफ ऑफिसर सेफ्टी मुकेश तोषांग, एरिया मेडिकल ऑफिसर डॉ एफआर साह, सीएमओआइ के अध्यक्ष डीपी सोय, श्रमिक प्रतिनिधि सह सीसीएल सेफ्टी बोर्ड सदस्य रविंद्रनाथ सिंह, इस्लाम अंसारी, ललन प्रसाद सिंह, बिनोद कुमार, संजीव चंदा, एसडी राम, बिजेन्द्र सिंह, कार्मिक प्रबंधक राजीव वर्मा, उज्जवल कुमार आदि मौजूद थे।

रैयत विस्थापित मोर्चा कोर कमेट्री की बैठक में सात सूत्री मांगों को लेकर आहूत बंद को सफल बनाने का निर्णय

पिपरवार (आजाद सिपाही)। सीसीएल पिपरवार क्षेत्र के इको पार्क में बुधवार को रैयत विस्थापित मोर्चा कोर कमेट्री की बैठक



हुई। जिसमें मोर्चा द्वारा सात सूत्री मांगों को लेकर 16 जनवरी से प्रस्तावित पिपरवार बंद को सफल बनाने का निर्णय लिया गया। उससे पूर्व बाइक व मशाल जुलूस निकालने पर भी सहमति बनी। बैठक में इकबाल हुसैन, रामचन्द्र उरांव, अर्जुन गंडु, महेंदर भोक्ता, जितेंद्र राम, हाजी जसीम, हाजी शहनवाज, रचित गंडु, सुरेश मसरो, रामबालक गंडु, विजय महतो, इदरीश अंसारी, भी जुलफ़न, रंथु गंडु, सकील अंसारी और पंकज राम सहित कई लोग मौजूद थे।

राहे में धान क्रय केंद्र का हुआ शुभारंभ

राहे (आजाद सिपाही)। प्रखंड के लैम्स पर्सिसर में धान क्रय केंद्र का बुधवार को उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर बीडीओ ने कहा कि किसानों के हित को देखते हुए पैबस के माध्यम से धान अधिप्राप्ति केंद्र में सरकार के निर्धारित 2050 रूपए प्रति विंटल की दर से खरीदारी की जाएगी। कहा कि किसान बिचौलियों से बचे एवं सीधे लैम्स में आकर अपने धान को बिक्री करें। उन्होंने लैम्स के अधिकारियों से कहा कि किसानों के पैसे समय पर उन्हें मिले इस पर ध्यान दें, ताकि अन्य फसलों की खेती वे समय पर कर सकें। मौके पर बीएसओ विष्णु खडित, द्रोण सिंह मुंडा, अक्षय महतो, जवाहरलाल महतो आदि उपस्थित थे।

ग्राम प्रधानों के सम्मान, अधिकार व मानदेय वृद्धि को लेकर बीडीओ को सौंपा सात सूत्री मांग पत्र

सिल्ली (आजाद सिपाही)। सिल्ली ग्राम प्रधान संघ के अध्यक्ष वासुदेव सिंह मुंडा के नेतृत्व में ग्राम प्रधानों के मान सम्मान, अधिकार एवं मानदेय वृद्धि को लेकर बीडीओ को सात सूत्री मांग पत्र सौंपा गया। साथ ही इन समस्याओं को जल्द से जल्द समाधान करने की बात कही। अध्यक्ष वासुदेव सिंह मुंडा ने बताया कि सिल्ली बीडीओ को पेश कानून को पूर्णतः मान्यता लागू करना ग्राम प्रधान का जिला स्तर परियच पत्र लागू करना, जमीन खरीद बिक्री दाखिल खासिज में ग्रामसभा की भागीदारी सुनिश्चित करने, ग्राम सभा द्वारा आयोजित प्रमाण पत्र जारी करना ग्राम प्रधानों के मानदेय में वृद्धि करने, पंचायत में सरकारी योजना उद्घाटन श्रीनाथ में भागीदारी सुनिश्चित करने और ग्राम प्रधानों का जीवन बीमा पॉलिसी लागू करने समेत कई बिंदुओं पर मांग पत्र सौंपा गया है। इस मौके पर भोलानाथ बड़ाईक, श्रीपद माली, करण चीक बड़ाईक, रामू माझी, परशुराम महतो, सुखराम बेदिया, कार्तिक महतो, अमित कुमार महली, देवानंद सिंह मुंडा, सुरेश मुंडा, रितु पूर्व सिंह मुंडा काशीनाथ बेदिया, नाराजाम बेदिया, गौर सुंदर माजी आदि उपस्थित थे।

भाजपा नेता की पत्नी के निधन पर जताया शोक

तमाड़ (आजाद सिपाही)। तमाड़ विधानसभा के भाजपा कार्यकर्ताओं ने रांची जिला भाजपा मंत्री कुणाल शाहदेव की पत्नी सुधा शाहदेव के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। भाजपाईयों ने मृतक सुधा शाहदेव की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा एवं शोक संतुप्त परिवार के प्रति गहरा शोक प्रेसित किया है। शोक व्यक्त करने वालों में अंडकी सांसद प्रतिनिधि अनुप साहू, रजित लाहरी, लक्ष्मण सिंह मुंडा, विवेक आनंद जायसवाल, आलोक दास, गणेश कुम्हार, सुकुमार घोष, राकेश भगत, सुबोध मुखर्जी, रेखा देवी, सुनीता बड़ाईक, किरण देवी, रूबी प्रवीण, मंजू दे, रेनु राय, पिकी देवी,रजकुमार महतो, रोहित राम, अरुण पाल, विष्णु लायक, अशोक पाल, दिलीप राय, मुकुंदर महतो शामिल थे।

अड़की में शिक्षकों का शारीरिक शिक्षा पर दो दिवसीय प्रशिक्षण का हुआ समापन

अड़की (आजाद सिपाही)। वन जीवन ग्रामीण विकास समिति एवं एलएमएस फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में 10 व 11 जनवरी को शारीरिक शिक्षा पर शिक्षकों रें लिए प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया। प्रशिक्षक शिक्षकों को शारीरिक शिक्षा के अंतर्गत छात्रों को स्पर्ध रहने के तरीकों को सिखाया गया एवं उसकी महत्ता को दर्शाया गया। इस शिक्षा के अंतर्गत छात्र शरीर की आवश्यकताओं एवं स्वस्थ रहने के लिए विभिन्न कलाओं जैसे गेम्स की जानकारी दी गई। शारीरिक शिक्षकों को प्रशिक्षण संपति के दिन विद्यालय के बच्चों के लिए खेल की सामग्री वितरण किया गया एवं वन जीवन ग्रामीण विकास समिति के निर्देशक महेंद्र सिंह एवं, प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी, अड़की, प्रखंड शिक्षा सम्यक् के हाथों से 30 विद्यालय शिक्षकों को 60 फुटबॉल 300 कोण गेम्स, 300 वेट मशीन, 30, इन्वेंतेप 60, बॉम 300, स्टॉप वाच 30, विशील 30 फुटबॉल में हवावा भरने का पम्प दिया गया. इस मौके थाना प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी अड़की, अड़की प्रमुख कृष्णा मुण्डा आदि उपस्थित थे।



धनबाद/बोकारो/बेरमो

पहले दिन 42 पंचायतों की हुई सुनवाई, कर्मियों को फटकार के साथ लगा अर्थदंड



बाधमारा प्रखंड कार्यालय में दो दिवसीय मनरेगा जन सुनवाई कार्यक्रम का आयोजन

आजाद सिपाही संवाददाता

बाधमारा/कतरास। बाधमारा प्रखंड कार्यालय स्थित सभागार में बुधवार को सामाजिक अंकेक्षण के तहत दो दिवसीय प्रखंड स्तरीय मनरेगा जनसुनवाई का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन प्रखंड प्रमुख गीता देवी, उप प्रमुख रंजीत कुमार सिंह और बीडीओ सुनील कुमार प्रजापति ने संयुक्त रूप से किया। इसके बाद अंकेक्षण में पहुंचे मनरेगा योजना के जिला लोकपाल की मौजूदगी में प्रखंड के 42 पंचायतों में वित्ति्य वर्ष 2020-21 व 2021-22 में मनरेगा के तहत हुए टीवीसी, कुंआ, पीएम आवास और डोभा

सहित अन्य योजनाओं का अंकेक्षण किया गया। शेष पंचायतों का अंकेक्षण गुरुवार को होगा। जनसुनवाई के दौरान विभिन्न पंचायतों के रोजगार सेवक, पंचायत सचिव, जेई, ईई, मुखिया सहित अन्य को आर्थिक दंड लगाते हुए राशि की वसूली की गई। इसकी जानकारी देते हुए मनरेगा योजना के प्रखंड बीपीओ लक्ष्मीकांत ने बताया कि बीते दिनों पंचायत स्तरीय जनसुनवाई हुई थी।उसके बाद प्रखंड स्तरीय जनसुनवाई किया जा रहा है। इस दौरान मास्टर रोल में मजदूरों का हस्ताक्षर नहीं, एमबी में कमी, अपूर्ण योजना सहित अन्य पहलुओं को देखते हुए मनरेगा लोकपाल के आदेश पर संबंधित कर्मियों को फटकार लगाते हुए आर्थिक दंड भई लगाया गया है।

जल संकट को लेकर भाजपाइयों ने किया झमाडा कार्यालय का घेराव, फूंक गया एमडी का पुतला

झरिया (आजाद सिपाही)। पिछले कुछ दिनों से झरिया क्षेत्र में व्याप्त जलसंकट और आंशिक जलापूर्ति को लेकर बुधवार को



झरिया नगर भाजपा की ओर से झरिया धनबाद मुख्य मार्ग स्थित झमाडा कार्यालय का घेराव एवं एमडी का पुतला दहन किया गया। कार्यक्रम का नेतृत्व नगर अध्यक्ष अरुण साहू ने किया। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता राजकुमार अग्रवाल ने कहा कि पिछले एक महीने से झरिया की जनता लगातार पानी के लिए तरस रही है। पार्टी की ओर से कई बार मांग पत्र भी दिए गए, लेकिन अधिकारियों ने पानी के बदले सिर्फ आश्वासन ही दिया। जबकि हमारी सरकार ने 312 करोड़ रुपए खास कर झरिया की जनता के लिए जलापूर्ति योजना को स्वीकृति दी थी, लेकिन आज तक झरिया की जनता पानी के लिए तरस रही है।झरिया विधायक चुनाव जीतने के बाद भूमिगत हो गई है। जनता की समस्याओं से उन्हें कोई सरोकार नहीं है।जिसका जवाब आने वाले समय में जनता देगी। वहीं ओबीसी मोर्चा के जिलाध्यक्ष शैलेश सिंह ने कहा कि जब सरकार ही निकम्मी है तो अधिकारी और प्रशासन भी तो वैसे ही होंगे।वहीं, झरिया नगर अध्यक्ष अरुण साहू ने कहा कि आज झरिया में जलापूर्ति की समस्या बद से बदतर हो गई है। कोई सुनने वाला भी नहीं है। उन्होंने कहा कि सभी प्रकार की तकनीकी समस्याओं का अभिलंब समाधान किया जाए। आज खुलेआम झमाडा कार्यालय में निजीकरण के नाम पर लूट हो रही है इसे तुरंत रोक जाए अन्यथा पार्टी चरणबद्ध आंदोलन को बाध्य होगी। चेतावनी दी कि अगर इससे भी बात नहीं बनी तो झमाडा कार्यालय में तालाबंदी भी की जाएगी।मौके पर सुमन अग्रवाल, स्वरूप भट्टाचार्य, सरवन राम, सुनील साहू, संजय वर्मा,अखिलेश सिंह, दिलीप भारती, कल्लू गुप्ता, जितेंद्र सिंह, राम प्रकाश सिंह, अरुण गोस्वामी, अशोक बरनवाल, राज माली, जितेंद्र राम, भोला सेन मोदक, अजय वर्मा, विजय चंद्रवंशी, मुन्ना खान, राजा राम चौहान, अमित चौहान, मनोज प्रसाद, हरिनारायण प्रसाद सिंह, राहुल बाल्मीकि, लीला बावरी, राधा देवी देवकी बाल्मीकि, अनीता बाल्मीकि, कुंती देवी, सुनीता देवी, मंजू देवी, सुमन देवी और राधा साहू आदि उपस्थित थे।

राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह में जागरूकता को लेकर बीएसएल की ओर से हुई पहल

बोकारो (आजाद सिपाही)। पांच से 28 जनवरी तक की अवधि राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के तौर पर मनाई जा रही है। नागरिकों को सड़क सुरक्षा के प्रति जागरूक करने के लिए बीएसएल के सुरक्षा अभियंत्रण विभाग की ओर से विभिन्न प्रकार के आयोजन किये जा रहें हैं। इस क्रम में बुधवार को पूर्वोहन इस्पात भवन परिसर में निदेशक प्रभारी अमरेन्दु प्रकाश द्वारा इस्पात कर्मियों को सुरक्षा शपथ दिलाई गई। इस मौके पर अधिशासी निदेशक (संकाय) बोंके तिवारी, अधिशासी निदेशक (सामग्री प्रबंधन) और अतिरिक्त प्रभार (कार्मिक एवं प्रशासन) अमिताभ श्रीवास्तव, अधिशासी निदेशक (वित्त एवं लेखा) एस रंगानी, अधिशासी निदेशक (परियोजनाएँ) सीआर महापात्रा, मुख्य महाप्रबंधक (सुरक्षा एवं अग्नि शमन सेवाएं) अमरेंद्र झा आदि उपस्थित थे। शपथ ग्रहण के बाद निदेशक प्रभारी ने इस्पात भवन परिसर से सड़क सुरक्षा पर जागरूकता के लिए एक सुरक्षा रथ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यह रैली नगर के प्रमुख हिस्सों से होकर गुजरते हुए नागरिकों को सड़क सुरक्षा का संदेश देती गई। इसी क्रम में आगामी 12-13 जनवरी को प्लांट परिसर में सड़क सुरक्षा पर सुरक्षा रथ के माध्यम से जागरूकता कार्यक्रम, क्रैश हेलमेट की जांच, सेक्टर 2 सी सेपटी ट्रेनिंग सेंटर में सिमुलेटर के माध्यम से वाहन चालकों की ट्रेनिंग, 16-19 जनवरी को सड़क सुरक्षा पर ऑन लाइन वि्वज का आयोजन, प्लांट परिसर में भारी वाहनों की चेकिंग, 16 एवं 17 जनवरी को मिनी ऑडिटीरियम में सड़क सुरक्षा पर आधारित निबंध, ड्राइंग एवं स्लोगन प्रतियोगिता एवं डिबेट कम्पीटीशन का आयोजन किया जाएगा। 14 जनवरी को हेलमेट एवं सीट बेल्ट के प्रयोग का संदेश दिया जाएगा। साथ ही नगर के प्रमुख चौक-चौराहों में लोगों को दो-पहिया वाहन चलाते वक्त हेलमेट के उपयोग के प्रति जागरूक किया जाएगा। 19 जनवरी को सेक्टर-2 सी उच्च विद्यालय में सड़क सुरक्षा पर आधारित निबंध, ड्राइंग एवं स्लोगन प्रतियोगिता इत्यादि का आयोजन किया जाएगा। 20 जनवरी को एचआरडी के मुख्य प्रेक्षागृह में अंतर विभागीय नुक्कड़ नाटक प्रतियोगिता का आयोजन किया जाएगा। 28 जनवरी को समापन समारोह एचआरडी के मुख्य प्रेक्षागृह में आयोजित होगा।

स्वदेशी मेले के आयोजन को लेकर हुआ भूमि पूजन

बोकारो (आजाद सिपाही)। स्वदेशी जागरण मंच की ओर से 18 जनवरी से शुरू होने वाले 21वां इसर्पांचल स्वदेशी मेले को लेकर बुधवार को भूमि पूजन किया गया। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि बोकारो इस्पात संयंत्र के सीजीएम भूपेंद्र सिंह पोपली ने विधिवत पूजा व हवन कर मेला की सफलता की कामना की।

झारखण्ड सरकार
राजस्व निबंधन एवं भूमि सुधार विभाग
(भू-अर्जन निदेशालय) या
समाहर्ता या समुचित सरकार

प्रारंभिक अधिसूचना						
(अधिनियम—30/2013 की धारा—11(1) के अधीन)						
चूंकि झारखण्ड सरकार /समाहर्ता को यह प्रतीत होता है कि मौजा—झालजमीरा, थाना—सेन्हा, थाना न०—173, अंचल—सेन्हा, जिला—लोहरदगा में भूमि सार्वजनिक प्रयोजन, यथा परियोजना “लोहरदगा जिलान्तर्गत “मण्डरा (MDR-001 पर)—सेन्हा (SH-08 पर) पथ (कुल लम्बाई 23.518 कि०मी०) का चौड़ीकरण एवं मजबूतीकरण/पुनर्निर्माण कार्य (पुलों के निर्माण एवं भू-अर्जन सहित)” परियोजना अपेक्षित है। प्रभावित परिवारों के पुनर्वासन एवं पुनर्व्यवस्थापन के प्रयोजनार्थ अपर समाहर्ता अथवा नियम 2 (1) (ख) के तहत नियुक्ति पदाधिकारी प्रशासन के रूप में नियुक्ति किए गए हे। अतएव अधिसूचित किया जाता है कि मौजा—झालजमीरा, थाना—सेन्हा, थाना न०—173, अंचल—सेन्हा, जिला—लोहरदगा में उपर्युक्त कथित परियोजना के लिए कमीवेश 12.616 एकड़ यानि 5.105 हेक्टेयर मानक माप का भूखंड, जिसका विस्तृत विवरण निम्नलिखित है, अर्जनाधीन है.....						
क्र० सं०	खाता सं०	सर्वे भूखंड सं०	स्वामित्व का प्रकार	भूमि का प्रकार	अर्जन के अधीन क्षेत्रफल	हितबद्ध व्यक्ति का नाम व पता
1	2	3	4	5	6	7
36	106	786	रैयती	टॉंड दो 0	0.142	जोरा पाहन, पिता—दुन्दिया पाहन दो अंश समान, जाति—, निवासी— व वो मुस्मात बाजो उर्राइन, पति—बुधु पाहन दो अंश, जाति—, निवासी— व वो सोमा पाहन,वो विरसु पाहन,वो बृधरान पाहन, पिता—सनी पाहन दो अंश समान, जाति—, निवासी— व वो सधवा पाहन, पिता—जोरा पाहन तीन अंश, जाति—, निवास
37	351	396	रैयती	टॉंड दो 0	0.074	सोमरा उर्राँव वो विरसा उर्राँव वो भोला उर्राँव, पिता—तुरिया उर्राँव 6 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो मोस्मात लोहर, पति—भीरा उर्राँव 2 अंश, जाति—, निवास
38	351	395	रैयती	टॉंड दो 0	0.057	सोमरा उर्राँव वो विरसा उर्राँव वो भोला उर्राँव, पिता—तुरिया उर्राँव 6 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो मोस्मात लोहर, पति—भीरा उर्राँव 2 अंश, जाति—, निवासी—
39	9	356	रैयती	दोन दो 0	0.120	शेख आदम्,वो शेख राजमन्,वो शेख रहमान,वो शेख गुदीन्,वो शेख रीझु, पिता—शेख रामधन 180 अंश समान, जाति—, निवासी— व शेख आदम्,वो शेख राजमन्,वो शेख रहमान,वो शेख गुदीन्,वो शेख रीझु, पिता—शेख रामधन 180 अंश समान
40	351	352	रैयती	अज्ञात 0	0.407	सोमरा उर्राँव वो विरसा उर्राँव वो भोला उर्राँव, पिता—तुरिया उर्राँव 6 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो मोस्मात लोहर, पति—भीरा उर्राँव 2 अंश, जाति—, निवास
41	165	2851	रैयती	दोन दो 0	0.187	बलिया उर्राँव, पिता—गन्दुरा उर्राँव एक अंश, जाति—, निवासी— व वो चरवा उर्राँव, पिता—दोगो उर्राँव एक अंश, जाति—, निवासी— व वो गोन्द्ला उर्राँव, पिता—सोमा उर्राँव एक अंश, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम टोला टागो टोली
42	166	2653	रैयती	दोन एक 0	0.005	बलिया उर्राँव, पिता—गन्दुरा उर्राँव एक अंश, जाति—, निवासी— व वो चरका उर्राँव, पिता—दोगो उर्राँव एक अंश, जाति—, निवासी— व वो गोन्द्ला उर्राँव, पिता—सोमा उर्राँव एक अंश, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम टोला टागो टोली
43	166	2654	रैयती	टॉंड दो 0	0.030	बलिया उर्राँव, पिता—गन्दुरा उर्राँव एक अंश, जाति—, निवासी— व वो चरवा उर्राँव, पिता—दोगो उर्राँव एक अंश, जाति—, निवासी— व वो गोन्द्ला उर्राँव, पिता—सोमा उर्राँव एक अंश, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम टोला टागो टोली
44	166	2727	रैयती	दोन दो 0	0.050	बलिया उर्राँव, पिता—गन्दुरा उर्राँव एक अंश, जाति—, निवासी— व वो चरवा उर्राँव, पिता—दोगो उर्राँव एक अंश, जाति—, निवासी— व वो गोन्द्ला उर्राँव, पिता—सोमा उर्राँव एक अंश, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम टोला टागो टोली
45	257	2582	रैयती	टॉंड दो 0	0.344	मंगल अहीर वो गोरो अहीर वो अधनु अहीर वो पोको देवी वो सुगन देवी, पिता—किशुन अहीर 1 अंश समान, जाति—ग्वाला, निवासी—निजग्राम टोला बड़की टोली
46	15	2393	रैयती	टॉंड दो 0	0.414	इमना महतो, पिता—शम्भुआ महतो एक अंश, जाति—, निवासी— व वो एतवा महतो,वो मागे महतो, पिता—करमा महतो एक अंश समान, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम टोला बडकी टोला पत्रालय मसमानो
47	78	2425	रैयती	टॉंड दो 0	0.056	चौटुआ उर्राँव,वो शानि उर्राँव, पिता—शोमरो उर्राँव दो अंश समान, जाति—, निवासी— व वो बुधु उर्राँव,वो बन्धना उर्राँव, पिता—मंगरु उर्राँव एक अंश समान, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम टोला बडकी टोली पत्रालया मसमानो
48	78	2426	रैयती	टॉंड दो 0	0.073	चौटुआ उर्राँव,वो शानि उर्राँव, पिता—शोमरो उर्राँव दो अंश समान, जाति—, निवासी— व वो बुधु उर्राँव,वो बन्धना उर्राँव, पिता—मंगरु उर्राँव एक अंश समान, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम टोला बडकी टोली पत्रालया मसमानो
49	14	2457	रैयती	दोन दो 0	0.002	इन्द्रदेव अहीर, पिता—पुरन अहीर , जाति—अहीर, निवासी—निजग्राम व इन्द्रदेव अहीर, पिता—पुरन अहीर, जाति—अहीर, निवासी—निजग्राम व इन्द्रदेव अहीर, पिता—पुरन अहीर, जाति—अहीर, निवासी—निजग्राम
50	362	2427	रैयती	स्कूल मकान 0	0.079	शिक्षा विभग बिहार सरकार, —————, जाति—, निवासी—.....
51	211	2481	रैयती	टॉंड दो 0	0.068	बुधु उर्राँव,वो बन्धे उर्राँव,वो वसु उर्राँव, पिता—चकंडा उर्राँव अंश समान, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम टोला पीपर टोली
52	160	2482	रैयती	टॉंड दो 0	0.310	बन्धे उर्राँव,वो वासु उर्राँव, पिता—चकन्द्रा उर्राँव अंश समान, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम
53	351	2489	रैयती	दोन दो 0	0.024	सोमरा उर्राँव वो विरसा उर्राँव वो भोला उर्राँव, पिता—तुरिया उर्राँव 6 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो मोस्मात लोहर, पति—भीरा उर्राँव 2 अंश, जाति—, निवासी— व वो लुरपा उर्राँव वो सोमरा उर्राँव, पिता—सुखिया उर्राँव 4 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शुकरा उर्राँव, पिता—मंगरु उर्राँव 4 अंश, जाति—, निवासी— व वो विरसु उर्राँव वो कालु उर्राँव, पिता—कहर उर्राँव 2 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो सोवरन उर्राँव वो करमा उर्राँव वो सूर्यप्रकाश उर्राँव, पिता—बन्दे उर्राँव 2 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो माडवारी उर्राँव, पिता—झीरु उर्राँव 2 अंश, जाति—, निवासी— व वो लादेन उर्राँव वो मांगा उर्राँव, पिता—टुज उर्राँव एक अंश समान, जाति—, निवासी— व वो मंगरी, पिता—ललुवा उर्राँव एक अंश, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम
54	133	2490	रैयती	दोन दो 0	0.183	दशई उर्राँव,वो शकलु उर्राँव,वो मागे उर्राँव, पिता—धुरा उर्राँव एक अंश समान, जाति—, निवासी— व वो बन्धना उर्राँव,वो सोमा उर्राँव, पिता—लुटुवा उर्राँव दो अंश समान, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम टोला बडकी टोली पत्रालय मसमानो
55	351	2504	रैयती	दोन दो 0	0.202	सोमरा उर्राँव वो विरसा उर्राँव वो भोला उर्राँव, पिता—तुरिया उर्राँव 6 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो मोस्मात लोहर, पति—भीरा उर्राँव 2 अंश, जाति—, निवासी— व वो लुरपा उर्राँव वो सोमरा उर्राँव, पिता—सुखिया उर्राँव 4 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शुकरा उर्राँव, पिता—मंगरु उर्राँव 4 अंश, जाति—, निवासी— व वो विरसु उर्राँव वो कालु उर्राँव, पिता—कहर उर्राँव 2 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो सोवरन उर्राँव वो करमा उर्राँव वो सूर्यप्रकाश उर्राँव, पिता—बन्दे उर्राँव 2 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो माडवारी उर्राँव, पिता—झीरु उर्राँव 2 अंश, जाति—, निवासी— व वो लादेन उर्राँव वो मांगा उर्राँव, पिता—टुज उर्राँव एक अंश समान, जाति—, निवासी— व वो मंगरी, पिता—ललुवा उर्राँव एक अंश, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम
56	351	2508	रैयती	टॉंड एक 0	0.193	सोमरा उर्राँव वो विरसा उर्राँव वो भोला उर्राँव, पिता—तुरिया उर्राँव 6 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो मोस्मात लोहर, पति—भीरा उर्राँव 2 अंश, जाति—, निवासी— व वो लुरपा उर्राँव वो सोमरा उर्राँव, पिता—सुखिया उर्राँव 4 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शुकरा उर्राँव, पिता—मंगरु उर्राँव 4 अंश, जाति—, निवासी— व वो विरसु उर्राँव वो कालु उर्राँव, पिता—कहर उर्राँव 2 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो सोवरन उर्राँव वो करमा उर्राँव वो सूर्यप्रकाश उर्राँव, पिता—बन्दे उर्राँव 2 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो माडवारी उर्राँव, पिता—झीरु उर्राँव 2 अंश, जाति—, निवासी— व वो लादेन उर्राँव वो मांगा उर्राँव, पिता—टुज उर्राँव एक अंश समान, जाति—, निवासी— व वो मंगरी, पिता—ललुवा उर्राँव एक अंश, जाति—उर्राँव, निवासी—निजग्राम

57	21	2509	रैयती	टॉंड एक 0	0.337	एतामत अली, पिता—शेख मौसखवस , पिता—मुसलमान, निवासी—ग्राम डांडु व एतामत अली, पिता—शेख मौसखवस , जाति—मुसलमान, निवासी—ग्राम डांडु व एतामत अली, पिता—शेख मौसखवस , जाति—मुसलमान, निवासी—ग्राम डांडु व एतामत अली, पिता—शेख मौसखवस , जाति—मुसलमान, निवासी—ग्राम डांडु , शेख आदम्,वो शेख राजमन्,वो शेख रहमान,वो शेख गुदीन्,वो शेख रीझु, पिता—शेख रामधन 180 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर, पिता—शेख जमाखर 32 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख जाफर,वो शेख ऊन्मोल,वो शेख सफदर,वो शेख अफदर,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज, पिता—शेख वामीन 27 अंश समान, जाति—, निवासी— व वो शेख वकारन्,वो शेख मेराज,वो शेख देवराज,वो विशज खतुन्,वो सुलतान खतुन्, पिता—शेख वामीन अं
----	----	------	-------	-----------	-------	---



बारबाटी स्टेडियम में हॉकी विश्व कप 2023 का उद्घाटन

रणबीर सिंह और दिशा पटानी ने बढ़ायी शोभा

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। कटक बारबाटी स्टेडियम में रंगारंग कार्यक्रमों और भव्य समारोहों के बीच बहुप्रतीक्षित हॉकी विश्व कप का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री नवीन पटनायक, केन्द्रीय खेल एवं युवा व्यापार मंत्री अनुराग ठाकुर, हॉकी इंडिया के अध्यक्ष दिलीप तिकरी, राज्य के खेल मंत्री तुषारकांति बेहेरा और अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ के अध्यक्ष तयब इक़्राम उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरुआत में ओड़िशा के आदिवासी लोक नृत्य के साथ शुरू हुआ। बाद में ओड़िशी नृत्यांगना द्वारा नृत्य परिवेशन किया गया। प्रसिद्ध कलाकारों



द्वारा प्रदर्शन पर बारबाटी में दर्शक झूम उठे। जाने-माने संगीत निर्देशक प्रीतम के म्यूजिक ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कटक में पहली बार

अत्याधुनिक ड्रोन शो देखने को मिला है। कटक के आसमान में एक साथ 500 ड्रोन उड़ने के साथ चिकमिल लाइट में हॉकी वर्ल्ड कप से जुड़ी तस्वीरें दिखाई



गई हैं। प्रमुख बॉलीवुड अभिनेता रणबीर सिंह और अभिनेत्री दिशा पटानी ओपनिंग नाइट की शोभा बढ़ावें। कानून व्यवस्था की स्थिति को ध्यान में रखते हुए

बारबाटी स्टेडियम को त्रिस्तरीय सुरक्षा में रखा गया है। 50 प्लाटून पुलिस बल और 200 सुरक्षा अधिकारियों को तैनात किया गया है।



भुवनेश्वर (आजाद सिपाही)। आज हॉकी महाकुंभ की ओपनिंग नाइट है। मुख्यमंत्री नवीन पटनायक आज महाकुंभ का अनुष्ठानिक रूप से उद्घाटन करेंगे। इसीलिए कटक, भुवनेश्वर और राउरकेला शहरों को नयी दुल्हन की तरह सजाया गया है। शहर के चारों तरफ पेंटिंग्स के साथ खूबसूरत तोरण से सजाया गया। कलिंग स्टेडियम को भी नया रूप दिया गया है। राउरकेला में नए हॉकी स्टेडियम का उद्घाटन भी हो चुका है। अब चारों ओर हॉकी हॉकी और हॉकी है। ऐसे माहौल में अंतरराष्ट्रीय बालुका शिल्पी सुदर्शन पटनायक ने अपना जलवा भी दिखाया है। उन्होंने कटक बालियात्रा मैदान में एक अनूठी कला का निर्माण किया है। जो देखता है वह देखता ही रहता है। सुदर्शन पटनायक ने सैंड आर्ट में निर्माण किये हॉकी स्टिक। उन्होंने इस रेत में अलग-अलग रंगों की हॉकी बॉल बनाया है। उन्होंने करीब 5000 हॉकी

बॉल से इस हॉकी स्टिक को बनाया। उन्होंने इसे इस तरह से डिजाइन किया है कि उन्होंने इसमें हॉकी ट्रैफी, हॉकी स्टिक, स्टेडियम, हॉकी बॉल और विभिन्न देशों के राष्ट्रीय झंडे रखे। यह हॉकी स्टिक 105 फुट लंबी, 45 फुट चौड़ी और 22 फुट ऊंची है। इसमें सुदर्शन पटनायक ने स्थापत्य कला में 68 टन बालू का

प्रयोग किया है। सुदर्शन पटनायक के पंद्रह छात्रों ने इसमें सहयोग किया है। लेकिन सबसे बड़ी बात यह है कि इसमें इस्तेमाल होने वाली हॉकी की गेंदों को अलग-अलग हॉकी खिलाड़ियों से इकट्ठा किया गया है। उम्मीद की जा रही है कि यह बालू का कला जल्द ही एक नया रिकॉर्ड कायम करेगी।

रेलवे ने की त्वरित कार्रवाई

रेल मंत्रालय और रेल मंत्री को ट्वीट के बाद यात्री को अपना खोया बैग मिला

आजाद सिपाही संवाददाता

भुवनेश्वर। बरपाली से केंसिंगा जाने वाली संबलपुर-रायगड़ा इंटर सिटी एक्सप्रेस में सफर कर रहे बिमल कुमार विद्याधर नाम के एक यात्री ने आज रेल मदद में अपने बैग के छूट जाने की शिकायत दर्ज करायी। रेलवे ने इस शिकायत पर तत्काल कार्रवाई शुरू की और श्री विद्याधर को आशवासन दिया कि उनके बैग को बरामद करने के लिए सभी प्रयास किए जायेंगे। इसके बाद मुनिगुड़ा और संबलपुर में आरपीएफ अधिकारियों को इस संबंध में सूचित किया गया। बाद में, मुनिगुड़ा में आरपीएफ टीम ने खोये हुए बैग को बरामद किया



और उचित सत्यापन के साथ शिकायतकर्ता को सौंप दिया। यात्री ने अपना बैग पाकर रेल मंत्रालय की त्वरित प्रतिक्रिया की सराहना की और यात्रियों के हित में इस तरह की प्रणाली विकसित करने के लिए रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव को धन्यवाद दिया।

आज राजधानी एक्सप्रेस रद्द

भुवनेश्वर (आजाद सिपाही)। 22823 भुवनेश्वर-नयी दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस भुवनेश्वर से 12/01/2023 (गुरुवार) को भारत के उत्तरी भागों में कोहरे को देखते हुए दिल्ली से राजधानी एक्सप्रेस ट्रेनों के देर से चलने के कारण रद्द रहेगी। यह निर्णय समय और समयबद्ध संचालन में समायोजन के लिए लिया गया है।

study MBBS in ABROAD

RUSSIA GEORGIA POLAND EGYPT KAZHAKASTAN UZBEKISTAN

Get Direct Admission in Top Government Medical Universities of ABROAD.

Call Now! +91-7903149721

www.universityfly.com

विश्व कप हॉकी टूर्नामेंट के लिए दो नयी विशेष ट्रेनें



भुवनेश्वर (आजाद सिपाही)।

भुवनेश्वर और राउरकेला में जनवरी 2023 के दौरान आयोजित होने वाले एफआइएच पुरुष विश्व कप हॉकी चैंपियनशिप के दौरान यात्रियों की मांग और अतिरिक्त भीड़ को ध्यान में रखते हुए, विशेषकर हॉकी प्रेमियों की सुविधा के लिए दो नयी विशेष ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। 02834 भुवनेश्वर-राउरकेला स्पेशल 14 से 30 जनवरी 2023 तक प्रत्येक सोमवार, बुधवार, गुरुवार और शनिवार को भुवनेश्वर से 2025 बजे (रात 8.25 बजे) प्रस्थान करेगी। वापसी में, 02833 राउरकेला-भुवनेश्वर स्पेशल 15 से 31 जनवरी 2023 तक प्रत्येक मंगलवार, गुरुवार, शुक्रवार और रविवार को राउरकेला से 2325 बजे (रात 11.25 बजे) प्रस्थान करेगी। इस ट्रेन में एक एसी-2 टियर, तीन एसी-3 टियर, आठ स्लीपर क्लास, चार सेकंड क्लास सीटिंग और दो गार्ड सह सामान वैन होंगे, जो दोनों दिशाओं से भुवनेश्वर-राउरकेला के बीच कटक, ढेंकनाल, तालचेर रोड, अंगुल, रेडाखोल, संबलपुर सिटी, झारसुगुड़ा और राजगंगपुर स्टेशन में रुकेगी। 02836/02835 पुरी-राउरकेला-पुरी हॉकी स्पेशल 14 से 31 जनवरी 2023 तक प्रतिदिन चलेगी। यह ट्रेन पुरी से 0515 बजे (05.15 बजे) प्रस्थान करेगी और 1245 बजे (12.45 बजे) राउरकेला पहुंचेगी। वापसी में यह ट्रेन राउरकेला से 1330 बजे (01.30 बजे) प्रस्थान करेगी और 2230 बजे (10.30 बजे) पुरी पहुंचेगी। इस ट्रेन में दो एसी-3 टियर, तीन स्लीपर क्लास, छह सेकंड क्लास सीटिंग और दो गार्ड सह सामान और जेनरेटर कार होंगी, जो पुरी और राउरकेला के बीच खोरधा रोड, भुवनेश्वर, नाराज माथापुर, ढेंकनाल, तालचेर रोड, अंगुल, रेडाखोल, संबलपुर सिटी, झारसुगुड़ा और राजगंगपुर स्टेशन में रुकेगी। इसके अलावा, 02832/02831 भुवनेश्वर-धनबाद-भुवनेश्वर स्पेशल भी प्रत्येक मंगलवार, शुक्रवार और रविवार को भुवनेश्वर से और प्रत्येक सोमवार, बुधवार और शनिवार को धनबाद से राउरकेला होते हुए रवाना होती है। इसी तरह, राउरकेला-मुकुपुर-राउरकेला राज्यरानी एक्सप्रेस, भुवनेश्वर-राउरकेला-भुवनेश्वर इंटर सिटी एक्सप्रेस, पुरी-राउरकेला-पुरी एक्सप्रेस ट्रेनें भी रोजाना भुवनेश्वर और राउरकेला को जोड़ती हैं। उपरोक्त के अलावा, भुवनेश्वर-नई दिल्ली राजधानी एक्सप्रेस और भुवनेश्वर-आनंद विहार एक्सप्रेस ट्रेनों की सेवा भी साप्ताहिक आधार पर भुवनेश्वर और राउरकेला के बीच उपलब्ध है।

बिहार में पुलिस पर हमला, 13 गाड़ियां फूकीं

बक्सर (आजाद सिपाही)। बिहार के बक्सर जिले में थर्मल पावर प्लांट के लिए जमीन अधिग्रहण के मुआवजे पर किसानों का प्रदर्शन उग्र हो गया। ग्रामीण बुधवार सुबह लाठी-डंडे लेकर पुलिस और पावर प्लांट पर टूट पड़े। पुलिस की गाड़ियों में तोड़फोड़ कर उनमें आग लगा दी। एंगुलेंस, फायरब्रिगेड समेत 13 गाड़ियां फूंक दीं। प्लांट के गेट पर भी आगजनी की गयी। पुलिस ने हवाई फायरिंग करके भीड़ को खदेड़ने की कोशिश की। दोनों तरफ से बीच-बीच में पत्थरबाजी भी हुई। इसमें चार पुलिसकर्मी घायल हुए हैं। मौके पर भारी पुलिस बल तैनात किया गया है। किसान 85 दिन से विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। किसानों ने मंगलवार को प्लांट के मुख्य गेट पर ताला लगा दिया और धरने पर बैठ गये। उस समय पुलिस ने कुछ नहीं किया, लेकिन रात को पुलिस ने बनारपुर गांव में घुसकर मारपीट की। चार लोगों को गिरफ्तार कर लिया।

भाजपा नेता ने किया कंबल का वितरण

आजाद सिपाही संवाददाता

रांची। जनपद में हाड़ कपाउ शीतलहर के चलते लोगों को सर्दी से राहत दिलाने के लिए भाजपा के वरिष्ठ नेता सह पूर्व आजी लक्ष्मण सिंह ने बुधवार को खिजुरसोता दुर्गा मंदिर के प्रांगण में कार्यक्रम आयोजित कर असहाय तथा कमजोर वर्ग के असुरक्षित व्यक्तियों, महिलाओं को कंबल वितरित किये। जनपद में धीरे-धीरे बढ़ रही कड़ाके की ठंड एवं सर्दी के मौसम को देखते हुए श्री सिंह ने गरीब एवं जरूरतमंद व्यक्तियों को ठंड से बचाव के लिए परसन पंचायत व कैलाढ़व पंचायत के पंदनाटांड, खिजुरसोता, महुआटांड, परसन, पुरुरेख, पुरुरेख कला, पुरुरेख खुर्द, प्रयासों, पूर्णापाली आदि गांवों के दर्जनों लोगों के बीच सैकड़ों जरूरत मंद असहाय, जरूरतमंद, गरीब, कमजोर एवं दिव्यांग लोगों को कंबल दिया गया। कंबल वितरण ढालो राणा, देवकी देवी, भवानी राम, द्वारिका राय, लीलो राय, गणपत पासवान, मेराहनी देवी, सीमा देवी, निर्मला देवी, बिशनी देवी, दुलारी देवी, पूना राम, लक्ष्मण महतो, शांति देवी, टेकनी देवी, गौरी देवी, ढलिया देवी शिवलाल पासवान आदि सैकड़ों



मौके पर इनकी रही मौजूदगी

मौके पर सांसद प्रतिनिधि उदय सिंह, अशोक कुमार राय, विनोद शर्मा, मण्डल अध्यक्ष राजेंद्र यादव, युवा नेता उपेंद्र सिंह, मुंसी राम, श्याम कुमार सिंह, नकुल राय, सुधीर सिन्हा, जयदेव पाण्डेय, सोभा महतो, सुकर महतो, नाथो राम, मनोज सिन्हा, राजकुमार यादव आदि दर्जनों लोग मौजूद थे।

लोग शामिल है। इस बाबत श्री सिंह ने कहा की जनपद में धीरे-धीरे बढ़ रही कड़ाके की ठंड एवं सर्दी के मौसम को देखते हुए मेरे निजी खर्च से गरीब एवं जरूरतमंद व्यक्तियों को ठंड से बचाव के लिए परसन एवं कैलाढ़व पंचायत क्षेत्र के विभिन्न ग्रामीण क्षेत्रों से आये लोगों को सैकड़ों कंबलों का वितरण किया। कहा कि ठंड से कोई भी जन

हानि नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि अत्याधिक ठंड व शीतलहर से उत्पन्न होने वाली समस्याओं के ध्छिगत निराश्रित एवं असहाय तथा कमजोर वर्ग के असुरक्षित व्यक्तियों को राहत पहुंचाने के उद्देश्य से कंबलों का वितरण कराया जा रहा है। कहा की प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी जरूरतमंद लोगों के बीच कंबल वितरण किया गया है।

अमेरिका में सभी उड़ानें ठप, कंप्यूटर सिस्टम में बड़ी खराबी

वाशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका में बुधवार को नोटिस टू एयर मिशन (एनओटीएस) सिस्टम में खराबी के चलते सभी फ्लाइट्स ठप हो गयी हैं। अब तक 3,578 फ्लाइट्स लेट हो चुकी हैं। 450 डोमेस्टिक और इंटरनेशनल फ्लाइट्स कैसिल कर दी गयी हैं। सिविल एविएशन की वेबसाइट पर इस बात की पुष्टि की गयी है। अमेरिकी इतिहास में इस तरह की यह पहली घटना है। इस पूरे मामले पर राष्ट्रपति जो बाइडेन ने रिपोर्ट मांगी है।

न्यू दास म्यूजिकल स्टोर्स

New Das Musical Stores

हमारे इस प्रतिष्ठान की रांची में कोई भी शाखा नहीं है।

Deals in:

YAMAHA, KAWAII, ESP, Fender, CASIO, BOSS, ZOOM, PAISE, TAMA, Studio master, Digitech, KORG, Cort, Epiphone, Zildjian, Roland, MAPEX, Gibson, Ibanez, stranger

Opp. Sankat Mochan Hanuman Mandi Main Road, Ranchi-1 (Jharkhand)
Phone : 0651-2201778 Mobile : 98351-64815, 72509-3303

मिलते-जलते नामों से सावधान

वर्मा प्रेस प्रा० लि० रांची

Verma's Today

शृंखला की निम्न पुस्तकें सर्वत्र उपलब्ध हैं— Based on JCERT

Class - VIII	Classes VI & VII
• Class VIII Today (Combined) ₹ 250	• Class VII Today (Combined) ₹ 240
• Class VIII Today (English Medium) ₹ 280	• Class VI Today (Combined) ₹ 240
• Mathematics Practical ₹ 60	• Hindi Vyakaran-I ₹ 60
• Science Practical ₹ 60	• English Grammar-I ₹ 60
• S. Science Practical ₹ 60	• Sanskrit Vyakaran-I ₹ 50
• Hindi Vyakaran-I ₹ 60	
• English Grammar-I ₹ 60	
• Sanskrit Vyakaran-I ₹ 50	

मिलते-जुलते नाम वाली नकली पुस्तकें से सावधान !

रत्न विक्रेता जय माता दी रत्न विक्रेता

ज्योतिष शास्त्र • वास्तु शास्त्र • हस्त शास्त्र • हस्त रेखा • अंक शास्त्र

पंडित शशि कान्त मिश्रा

पता - लाईन टैंक रोड, गोपाल गंज गली, अपोजिट-भूतपूर्व बारगेन बाजार, रांची
फोन :- 93347418296, 9835195382, 9431792761

BAWARCHI FAMILY RESTAURANT

Please Join Us to Celebrate the opening Ceremony of our New Restaurant

Venue : Sector-9 Near Hatia More Bokaro Steel City (Jharkhand)

With Best Compliments From :

BAWARCHI FAMILY RESTAURANT

Mob. : 65423 66205, 76338 16941

अविराम ए ग्रुप ऑफ इंस्टीटयुशंस (मान्यता एवं संबद्धता रांची वि.वि., जैक, एनपीयू, पी.सी.आई., JSPC, JNRC एवं चिह्नित NCTE भुवनेश्वर उड़ीसा)

टिको, कुड़, लोहरदगा एवं हुताप, चंदवा, लातेहार (झारखंड)

इंटर एवं स्नातक पास बालक/बालिकाएं शीघ्र प्रवेश लें एवं B.ed के अतिरिक्त अन्य में सीधे प्रवेश हेतु आवेदन करें

झारखंड स्टेट एवं रांची विश्वविद्यालय में टॉपर देने वाले संस्थान में प्रवेश का सुनहरा अवसर

ए.एन.एम A.N.M	डी.फार्मेसी D.Pharmacy	बी.एड. B.Ed.	बी.एस.सी. नर्सिंग B.Sc Nursing	डी.एल.एड. D.El.Ed
------------------	---------------------------	-----------------	-----------------------------------	----------------------

FACILITIES : SCHOLARSHIP • BUS & HOSTEL FACILITY • CAMPUS PLACEMENT • WELL EQUIPPED LAB • ONLINE ADMISSION PAYMENT & ONLINE CLASS FACILITY

URGENT REQUIREMENT

- B. Sc Nursing/ M.Sc Nursing Pass
- D. Pharma/ B. Pharmacy Pass
- B.Ed & M.Ed in (Science/Literature Social Science)

Send resume within 3 days in 7782054270

www.aviramcollege.com, www.aviramcollegeofnursing.com
bedcollege2011@gmail.com/aviram.gv@gmail.com

आजाद सिपाही की ओर से स्वत्वाधिकारी लैटेंडकेप मीडिया प्रा. लि., प्रकाशक एवं मुद्रक हरिनारायण सिंह के लिए 176 कोकर चौक, ओड्ड एचबी रोड, रांची 834001 (झारखंड) से प्रकाशित तथा डीबी प्रिंट सोल्यूशंस (ए यूनिट ऑफ डीबी कार्प लिमिटेड), प्लॉट नं. 535 एवं 1272, ललगुटवा, पुलिस स्टेशन, रातू, रांची से मुद्रित।

संपादक : हरिनारायण सिंह, स्थानीय संपादक* : विनोद कुमार, **पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के लिए जिम्मेदार, राज्य समन्वय संपादक : अनुर शर्मा। समस्त दिवानी विवादों, न्यायोचित कार्रवाइयों एवं दंडित परिवारों के लिए क्षेत्राधिकार रांची न्यायालय में रहेगा। फोन : 9264434560, R.N.I. No.-JHAHIN/2015/65109, Postal Registration No. RN/249/2019-21

